7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 लोकसभा चुनाव में गोरखपुर से ताल ठोंक रही हैं काजल | 5 अखिलेश यादव ने उठाए सवाल | 8 'आपने मुझे आकर्षित किया

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 28 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 05 फरवरी, 2024

लालकृष्ण आडवाणी भारत रत्न

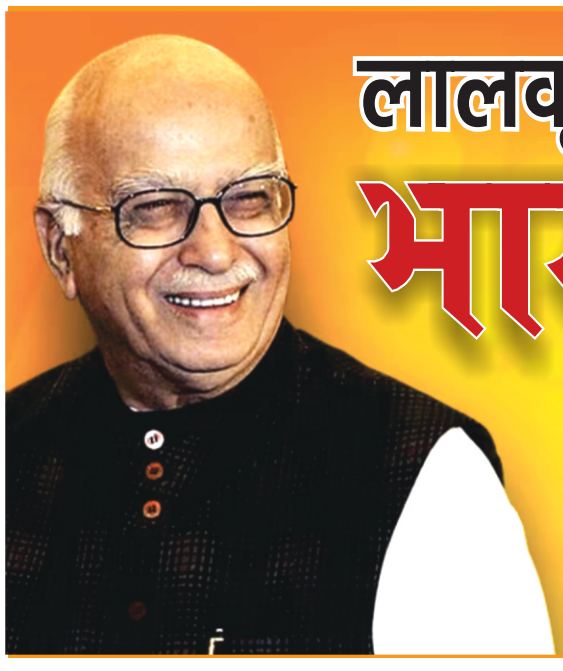

भारत रत्न की घोषणा पर देश के पूर्व उपप्रधानमंत्री आडवाणी ने कहा कि अत्यंत विनम्रता और कृतज्ञता के साथ मैं भारत रत्न स्वीकार करता हूं जो आज मुझे प्रदान किया गया। यह न केवल एक व्यक्ति के रूप में मेरे लिए सम्मान की बात है बल्कि उन आदर्शों और सिद्धांतों के लिए भी सम्मान की बात है जिनकी मैंने अपनी पूरी क्षमता से जीवन भर सेवा की है।

भारत रत्न की घोषणा पर आई लाल कृष्ण आडवाणी की पहली प्रतिक्रिया, इन दिग्गज नेताओं को किया याद

लाल कृष्ण आडवाणी को भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा

मैं 'भारत रत्न' स्वीकार करता हूं जो आज मुझे प्रदान किया गयाः आडवाणी

बेटी प्रतिभा ने जताई खुशी, पिता को खिलाई मिठाई

एएनआई, नई दिल्ली। 1990 के दशक की शुरुआत में अयोध्या के राम मंदिर के लिए अपनी रथ यात्रा से पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाले भाजपा के दिग्गज नेता लाल कृष्ण आडवाणी को भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा। भारत रत्न की घोषणा पर देश के पूर्व उपप्रधानमंत्री आडवाणी ने एक बयान जारी किया है। इस पर कहा गया है कि 'अत्यंत विनम्रता और कृतज्ञता के साथ, मैं 'भारत रत्न' स्वीकार करता हूं जो आज मुझे प्रदान किया गया है। यह न केवल एक व्यक्ति के रूप में मेरे लिए सम्मान की बात है, बल्कि उन आदर्शों और सिद्धांतों के लिए भी सम्मान की बात है, जिनकी मैंने अपनी पूरी क्षमता से जीवन भर सेवा की है। दो दिग्गज नेताओं को याद करते हुए आडवाणी ने आगे कहा, 'आज मुझे दो व्यक्ति कृतज्ञतापूर्वक याद आ रहे हैं जिनके साथ मुझे घनिष्ठता से काम करने का सम्मान मिला, पंडित दीन दयाल उपाध्याय और भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी।'

बेटी प्रतिभा ने जताई खुशी, पिता को खिलाई मिठा

पिता को भारत रत्न से नवाजे जाने पर बेटी प्रतिभा प्रतिभा आडवाणी ने उनके साथ मिठाइयां बांटीं और उन्हें गले लगाया। उन्होंने इस पर खुशी जताते हुए कहा 'मुझे और पूरे परिवार को बहुत खुशी है। निश्चित ही आज मुझे जिसकी सबसे ज्यादा याद आ रही है वो मेरी मां हैं, जिनका पापा (लालकृष्ण आडवाणी) के जीवन में बहुत बड़ा योगदान रहा है।' जब एजेंसी **ANI** ने प्रतिभा से सवाल किया कि भारत रत्न से सम्मानित किए जाने की जानकारी सुनकर लाल कृष्ण आडवाणी का क्या रिएक्शन था?

किस योजना के लिए कितना खर्च होगा मंत्रालयों को मिला कितना पैसा

न्यूज डेस्क। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में अंतरिम बजट पेश कर दिया। बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार की योजनाओं के केंद्र में गरीब, युवा, महिला और अन्नदाता हैं। बजट में कृषि, स्वास्थ्य, रक्षा, रेल, अधोसंरचना समेत सभी क्षेत्रों का लिए के लिए कई एलान हुए। बजट में कई अहम मंत्रालयों के लिए आवंटन भी किया गया।

अहम योजनाओं के लिए बजट

योजनाएं	बजट (करोड़ में)
मनरेगा योजना	86,000
आयुष्मान भारत	7,500
पीएलआई योजना	6,200
सौर ऊर्जा (ग्रिड)	8,500
राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन	600

मंत्रालयों के लिए बजट आवंटन

मंत्रालय	बजट
रक्षा	6.2
संचार	1.37
गृह	2.03
रेल	2.55
ग्रामीण विकास	1.77
कृषि और किसान कल्याण	1.27
सड़क परिवहन और राजमार्ग	2.78
रसायन मंत्रालय और उर्वरक	1.68
उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण	2.13

(लाख करोड़ में)

आपके आशियाने के लिए

- पीएम आवास योजना पांच साल तक बढ़ी।
- अगले पांच वर्षों में दो करोड़ नए घर।
- मध्यम वर्ग को घर देने के लिए नई योजना।
- PMAY के लिए 2023-24 में ₹79,590 करोड़ बजट
- 2024-25 में बढ़कर ₹80,671 करोड़ बजट

पर्यटन के क्षेत्र को बढ़ावा

- राज्यों में प्रतिष्ठित पर्यटन केंद्रों के विकास के लिए प्रोत्साहन।
- राज्यों को दीर्घकालिक ब्याज मुक्त ऋण।
- लक्षद्वीप सहित द्वीपों में बुनियादी ढांचे का विकास।
- यहां बंदरगाह कनेक्टिविटी और सुविधाओं के लिए परियोजनाएं।

बुनियादी ढांचे पर जोर

- पीएम गति शक्ति के तहत तीन प्रमुख रेलवे कॉरिडोर
- उड़ान योजना के तहत मौजूदा हवाई अड्डों का विस्तार
- नए हवाई अड्डों का व्यापक विकास
- मेट्रो रेल और नमो भारत के जरिए शहरी बदलाव को बढ़ावा

भौतिक अधोसंरचना का विकास

	वित्तीय वर्ष 2015	वित्तीय वर्ष 2022
राष्ट्रीय राजमार्ग (किमी)	97.991	1.44.634
विद्युतीकृत रेल मार्ग (किमी)	22.224	50.394
हवाई अड्डे	74	149

घटती बेरोजगारी दर

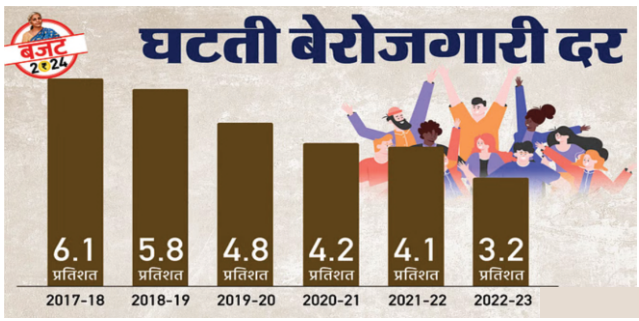

देश में घटती गरीबों की संख्या

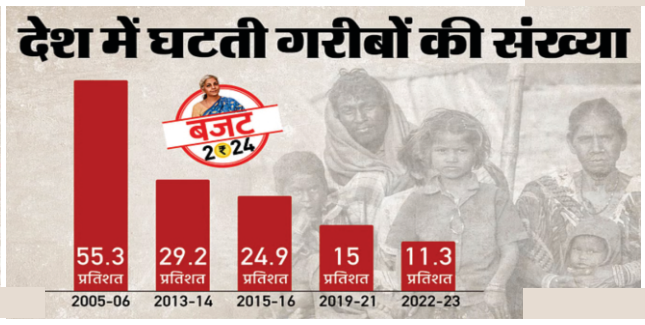

संस्थानों की बढ़ी संख्या

संस्थान	2014 में संख्या	2023 में संख्या
एम्स	16	23
आईआईटी	7	22
विश्विद्यालय	723	1113

लोकलुभावन योजनाओं की जगह वित्तीय अनुशासन पर सरकार का जोर, महिला, गरीब, किसान, युवा को थोड़ी राहत

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव से पूर्व पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा का बेहतर प्रदर्शन, विपक्षी गठबंधन में अंतर्विरोध, जदयू के फिर से राजग में शामिल हो जाने और पुराने साथियों का भाजपा की शर्त पर एनडीए का दरवाजा खटखटाने के कारण सरकार का आत्मविश्वास बढ़ा हुआ दिखता है। लोकसभा चुनाव की आहट के बीच मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल के अंतिम (अंतरिम) बजट में लोकलुभावन घोषणाओं की जगह वित्तीय अनुशासन पर जोर है। आयकर स्लैब में कोई बदलाव नहीं हुआ। राहत की हल्की फुहारें कमोबेश पीएम के बताए चार वर्गों महिला, गरीब, किसान और युवा तक ही सीमित दिखीं। सरकार ने अनुदान की जगह सुधार पर सख्ती से साथ खड़े रहने के संकेत दिए। सरकार ने दस साल की उपलब्धियां गिनाकर संदेश दिया कि अर्थव्यवस्था में सब चंगा है।

लोकलुभावन घोषणाओं से दूरी बताती है

सरकार जीत की हैट्रिक लगाने के प्रति किस कदर आश्वस्त है। वैसे भी लोकसभा चुनाव से पूर्व पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा का बेहतर प्रदर्शन, विपक्षी गठबंधन में अंतर्विरोध, जदयू के फिर से राजग में शामिल हो जाने और पुराने साथियों का भाजपा की शर्त पर एनडीए का दरवाजा खटखटाने के कारण सरकार का आत्मविश्वास बढ़ा हुआ दिखता है।

अनाप–शनाप घोषणाएं न करने के मोदी मंत्र का पालन

साल 2019 में मोदी सरकार के पहले कार्यकाल के अंतिम बजट से पहले कांग्रेस नेता राहुल गांधी की न्याय योजना को जबर्दस्त प्रचार मिल रहा था। इसमें हर परिवार को हर साल 72 हजार रुपये देने की घोषणा थी। तब भी मोदी ने वित्तीय अनुशासन बनाए रखने और वही घोषणा करने पर जोर दिया था, जिसे पूरा किया जा सके। तब किसानों के लिए पीएम किसान सम्मान निधि की घोषणा की गई थी। एक केंद्रीय मंत्री के मुताबिक, पीएम कहते हैं कि घोषणाएं ऐसी हों, जिन्हें पूरा किया जा सके। मतदाता पहले से अधिक सतर्क हैं। अतार्किक घोषणाओं से सियासी नुकसान होता है। ऐसी घोषणाओं से संदेश जाता है कि सरकार चला–चली की बेला में है। इसलिए सरकार लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरी है, तो सार्थक घोषणाएं की जाएं, जिससे लोगों का भरोसा कायम रहे।

स्पष्ट संदेश

विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों के सशक्तीकरण के लिए जोर अनुदान की जगह सुधारों पर होगा। सरकार का अनुदान कमोबेश गरीब वर्ग को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने तक सीमित रहा है। बुनियादी ढांचा क्षेत्र में 11 प्रतिशत की जबर्दस्त बढ़ोतरी से सुधारों के प्रति आग्रह को समझा जा सकता है। अंतरिम बजट में पीएम मोदी के बताए चार वर्गों में सबसे ज्यादा जोर गरीब व महिलाओं पर है। इनमें गरीबों के लिए बजट से पहले ही मुफ्त अनाज योजना पांच साल बढ़ा दी गई थी। अब पांच साल में दो करोड़ और नए आवास व सूर्योदय योजना में एक करोड़ परिवारों को 300 यूनिट मुफ्त बिजली देने का वादा है। तीन करोड़ लखपति दीदी तैयार करने की घोषणा की गई है। कृषि जलवायु क्षेत्रों में विभिन्न फसलों पर नैनो डीएपी का प्रयोग करने की घोषणा की गई है।

सम्पादकीय

इससे पहले संसद के शीतकालीन सत्र में विपक्ष के करीब डेढ़ सौ सांसदों का निलम्बन किया गया था।

विपक्ष नहीं, सरकार करे आत्मपरीक्षण

संसद का बजट सत्र प्रारंभ हुआ है। इससे पहले संसद के शीतकालीन सत्र में विपक्ष के करीब डेढ़ सौ सांसदों का निलम्बन किया गया था। इस सत्र में आशा बंधी थी कि आम चुनाव की दहलीज पर खड़े देश की महापंचायत का अंतिम सत्र तो कम से कम ऐसा होगा जिसमें सत्ता पक्ष, खासकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उन तमाम मुद्दों पर जवाब देंगे जो सिलसिलेवार हों, तार्किक हों और तथ्यपरक हों– जिनसे देश जूझ रहा है और जिस पर खुली चर्चा अपेक्षित है। लेकिन ऐसा शायद ही हो, क्योंकि राष्ट्रपति के अभिभाषण से पहले, श्री मोदी ने संसद भवन के बाहर अपने तईं इस सत्र का प्रारम्भ विपक्ष को कोसते हुए किया। प्रधानमंत्री मोदी के संक्षिप्त उद्बोधन ने साफ कर दिया है कि 17वीं यानी मौजूदा लोकसभा का अंतिम सत्र भी उसी तर्ज़ पर होने जा रहा है जिसमें विपक्षी सांसद देश के समक्ष ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा करना चाहेंगे परन्तु प्रधानमंत्री स्वनिर्मित परम्परा के अनुरूप संसद के बाहर सभाएं एवं रैलियां करते फिरेंगे, अन्य मंत्रीगण मोर्चा सम्हालेंगे, असंतुष्ट सदस्यगण सभा त्याग करेंगे और किसी मौके पर नमूदार होकर मोदी आत्मगान करेंगे, नेहरू से लेकर वर्तमान कांग्रेसी नेताओं तथा समग्र विपक्ष का उपहास करते हुए संसद का सत्रावसान घोषित करा देंगे। हो सकता है कि पहले की भांति कुछ या बहुत से सदस्यों का फिर से निलम्बन देखने को मिले। जो भी हो, पहले से कोई कयास लगाना उचित तो नहीं परन्तु मोदी कालखंड के दौरान हुए सभी सत्रों पर नज़र डालें और याद करें कि उनका हश्र क्या हुआ था, तो इसके अलावा इस सत्र की भी किसी और तरह की परिणति नहीं सूझ सकती। वैसे श्री मोदी ने नये संसद भवन में जाने के बाद कम से कम यह अच्छी परम्परा तो प्रारम्भ की है कि वे सत्र प्रारम्भ होने के पहले मीडिया के समक्ष चन्द मिनटों के लिये ही सही, कुछ कहने लगे हैं। हालांकि उन्होंने इस लिहाज से अपनी लीक कतई नहीं छोड़ी है कि वे पत्रकारों को सवाल करने की छूट दें; और हमेशा की तरह उनके उद्बोधनों की विषयवस्तु प्रतिपक्षी सदस्यों का अपमान और उपहास ही होता है। सो परिपाटी को बरकरार रखते हुए प्रधानमंत्री ने अपने बुधवार के वक्तव्य में अपने भीतर संचित कटुता की ही पुनर्प्रस्तुति की। उन्होंने विपक्षी सदस्यों के लिये इस बजट सत्र को 'पश्चाताप करने का अवसर' बताया और उन्हें 'लोकतंत्र का चीरहरण करने वाले हुड़दंगियों' की श्रेणी में रखा। नरेन्द्र मोदी का कहना था कि 'अगर वे अपने व्यवहार के बारे में अपने निर्वाचन क्षेत्रों में सौ लोगों से भी बात करें तो उन्हें पता चलेगा कि वे (मतदातागण) भी खुश नहीं होंगे और उन्हें उनके इस तरह के काम भी याद नहीं होंगे। मतदाताओं को उन्हीं के नाम याद रहते हैं जो सकारात्मक रहते हुए सरकार की तीखी आलोचना करते हैं' उनका कहना था कि 'आदतन हुड़दंगी (आशयः मुखर व सरकार विरोधी) सदस्यों के लिये यह आत्मचिंतन का अवसर है जिसे उन्हें हाथ से नहीं जाने देना चाहिये।'

निश्चित ही यह वही मोदीनुमा तरीका है जिससे वे विपक्षी दलों से हर–हमेशा डील करते आये हैं। पिछले सत्र में भी उन्होंने इसी तरह का कटाक्ष करते हुए कहा था कि 'विपक्ष को तीन राज्यों की पराजयों का गुस्सा संसद के भीतर कार्यवाहियों के दौरान नहीं निकालना चाहिये।' उनका मंतव्य छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश व राजस्थान के विधानसभा चुनावों से था जिसमें भाजपा को जीत मिली थी। कहना न होगा कि श्री मोदी ने संसद के बाहर विपक्ष की आलोचना व उन्हें नीचा दिखाने का अवसर नहीं छोड़ा, जो साफ इशारा करता है कि इस सत्र में होने वाली वाली बैठकों एवं चर्चाओं का स्वरूप कैसा होगा।

प्रधानमंत्री मोदी का यह बयान दरअसल सदन के भीतर अपने बचाव की उनकी रणनीति है। सत्र ऐसे समय में हो रहा है जबकि प्रधानमंत्री मोदी के पूरे 10 वर्षों की तमाम नाकामियों, निरंकुश कार्यप्रणाली, विभाजनकारी नीतियों, हिंसक विचारों तथा अनेकानेक तरह के घोटालों व भ्रष्टाचार लोगों के सामने आ चुके हैं और जिनके बाबत सवाल पूछे जाने लाजिमी हैं। जैसा कि नरेन्द्र मोदी का तरीका है, वे पहले ही सरकार विरोधी प्रश्नों को नकारात्मकता साबित करते हैं, बुधवार को भी उन्होंने सत्र की पूर्वपीठिका तैयार की है। वे बार–बार खुली चर्चा की बात करते हैं लेकिन उनके दोनों ही कालावधियों का इतिहास रहा है, जो संसदीय कार्यवाही के रूप में दर्ज भी है, कि वे स्वयं बहसों से भागते हैं। किसी भी विषय पर उन्होंने संतोषजनक जवाब नहीं दिये हैं।

विभिन्न योजनाओं की नाकामियां हों या राफेल लड़ाकू जहाज खरीदी, नोटबन्दी हो या जीएसटी, कोविड–19 के दौरान लोगों की दुर्दशा हो या मणिपुर की हिंसा– लोगों को कभी याद ही नहीं पड़ता कि किसी भी मुद्दे पर उन्होंने संजीदगी के साथ चर्चा की हो। संसद के अंदर के उनके भाषण आम सभाओं या चुनावी रैलियों में दिये जाने वाले भाषणों से अलग नहीं होते जिनमें उनका उद्देश्य विपक्ष को अपमानित करना एवं खुद को देश का सबसे प्रभावशाली व्यक्ति बतलाना होता है। उनके ज्यादातर भाषणों को देखा जाये तो वे गर्वोक्ति के उदाहरणों के अलावा कुछ नहीं होते। पिछले एक सत्र में उन्होंने कारोबारी गौतम अदानी के साथ उनके रिश्तों व उसे बेजा मदद पहुंचाने के आरोपों पर जवाब देने के दौरान खुद को 'अकेले ही सब पर भारी' बताया था। सच तो यह है कि अंतिम सत्र में विपक्ष को नहीं स्वयं प्रधानमंत्री मोदी और सरकार को आत्मपरीक्षण करना चाहिये।

राम नाम सत्य है

परीक्षा का दबाव झेलने के लिए खुद को सामर्थ्यवान बनाने की सीख देने भर से बच्चे जीवन के तनाव को झेलने के लिए तैयार नहीं हो जाएंगे। उसके लिए उन्हें सकारात्मक माहौल भी बना कर देना पड़ेगा। मगर इस वक्त देश के आम आदमी के हिस्से में निराशा का अंधेरा ही भरा हुआ है। इस अंधेरे को दूर करने के लिए जब कोई उपाय नहीं सूझता तो वह भगवान की शरण में जाता है और यहीं भाजपा लाभ लेने पहुंच जाती है। मम्मी पापा आई कान्ट डू जेईई, सो आई सुसाइड, आई एम लूज़र, आई एम वर्स्ट डॉटर, सॉरी मम्मी पापा, यही लास्ट ऑप्शन है। और इन पंक्तियों के साथ ही 19 बरस की निहारिका का संभावनाशील जीवन खत्म हो गया। मां–बाप ने बड़े चाव से नाम रखा होगा कि उनकी बच्ची का जीवन आकाशगंगा की तरह जगमगाता रहेगा। लेकिन केवल 19 साल की उम्र में निहारिका ने अपने जीवन में छाई निराशा को इतना गहन अंधकार समझ लिया कि उसने जीने की जगह मरने का विकल्प चुना। निहारिका ने खुद को लूजर यानी हारा हुआ समझा और उसके बाद अपने मम्मी–पापा को सॉरी कहते हुए बता दिया कि यही लास्ट ऑप्शन है। कोटा में जेईई मेन्स की तैयारी कर रही निहारिका का 30 जनवरी को इम्तिहान था और उससे एक दिन पहले 29 जनवरी को उसने आत्महत्या कर ली। कोचिंग संस्थाओं के गढ़ कोटा में पिछले साल 30 छात्रों ने परीक्षाओं के दबाव और नतीजों के कारण आत्महत्या की है, इस साल अभी दो ही आत्महत्याओं की खबर आई है। निहारिका से पहले 24 जनवरी को एक 18 साल के लड़के ने खुद की जान ले ली थी, उसे नीट की परीक्षा में बैठना था। वैसे बीते एक सप्ताह में देश के अलग–अलग शैक्षणिक संस्थानों में और भी बच्चों ने आत्महत्याएं की हैं, लेकिन अब जवान मौत की खबरें तब तक सुर्खियां नहीं बनतीं, जब तक उनमें कोई सनसनीखेज तथ्य, प्रेम त्रिकोण या एकतरफा प्रेम का कोण नजर नहीं आए। देश के नौजवान निराश होकर मौत को गले क्यों लगा रहे हैं, ऐसे गंभीर सवालों पर चर्चा करने अगर बैठ जाएं तो फिर मंदिर का काम कौन करेगा। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी है, लेकिन अभी सत्ता की प्रतिष्ठा और परीक्षा दोनों बाकी है।

निहारिका ने खुद को लूज़र मान लिया, लेकिन क्या आत्महत्या करने से पहले उसे मोदीजी की परीक्षा पर चर्चा का 7वां एपिसोड नहीं सुन लेना चाहिए था। क्या पता मोदीवाणी सुनकर मन के विचार बदल जाते। मीडिया में तो यही बताया गया है कि पीएम सर ने अपनी मेगा क्लास में परीक्षा में बैठने के गुर बच्चों को बतलाए। उन्हें टाइम मैनेजमेंट से लेकर आने वाली हर चुनौती के लिए तैयार करने को प्रेरित किया। मोदी सर ने बताया कि हमें किसी भी प्रेशर को झेलने के लिए खुद को सामर्थ्यवान बनाना चाहिए। दबाव को हमें अपने मन की स्थिति से जीतना जरूरी है। हालांकि इस सीख में कुछ भी नयापन नहीं है। गीता के उपदेश से लेकर जीत आपकी जैसी मोटिवेशनल यानी (तथाकथित) प्रेरणादायी किताबों में ऐसी ही बातें लिखी रहती हैं। इन्हें किसी भी किताब की दुकान से खरीदकर बच्चे पढ़ सकते हैं। अगर प्रधानमंत्री लाखों रुपए खर्च करके कोई चर्चा कर रहे हैं, और उसका दो कौड़ी का लाभ न मिले, तो फिर ऐसी परीक्षा पर चर्चा का क्या प्रयोजन। परीक्षा का दबाव झेलने के लिए खुद को सामर्थ्यवान बनाने की सीख देने भर से बच्चे जीवन के तनाव को झेलने के लिए तैयार नहीं हो जाएंगे। उसके लिए उन्हें सकारात्मक माहौल भी बना कर देना पड़ेगा। मगर इस वक्त देश के आम आदमी के हिस्से में निराशा का अंधेरा ही भरा हुआ है। इस अंधेरे को दूर करने के लिए जब कोई उपाय नहीं सूझता तो वह भगवान की शरण में जाता है और यहीं भाजपा लाभ लेने पहुंच जाती है। अयोध्या में अगर रोजाना दर्शन के लिए लाखों लोग पहुंच रहे हैं, तो वे महज भक्ति भाव से उमड़ रहे हैं, या उन्हें अपने जीवन की बेहतरी के लिए भगवान का ही सहारा है, इस बात का ईमानदार विश्लेषण और सर्वेक्षण किया जाए, तो शायद कोई नए तथ्य सामने आएं।

बहरहाल, प्रधानमंत्री परीक्षा पर चर्चा में उपदेश देने की जगह अगर परीक्षा के दबाव को कम करने की स्थितियां निर्मित करने में अपनी ऊर्जा लगाएं, तो इस देश के करोड़ों बच्चों का जीवन संवर जाएगा। हर साल जेईई की परीक्षा में 12–15 लाख बच्चे औसतन बैठते हैं और इनमें से केवल 50–60 हजार बच्चों के लिए ही स्थान रहता है। कमोबेश यही हाल नीट और बाकी परीक्षाओं का है। अगर मंदिर या दिखावे के बाकी निर्माण कार्यों पर लगने वाली लागत का मामूली हिस्सा भी उच्च शिक्षण संस्थाओं को खोलने के लिए लगाया जाए, तो फिर बच्चों को सामर्थ्यवान बनने के उपदेश देने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जितने ज्यादा स्कूल–कॉलेज, आईआईटी, आईआईएम, मेडिकल कॉलेज, विश्वविद्यालय खुलेंगे, उतने अधिक बच्चों को पढ़ने के मौके मिलेंगे। फिर उन्हें उम्र से पहले ही गलाकाट स्पर्द्धा का शिकार नहीं होना पड़ेगा, इससे आरक्षण जैसे मुद्दों पर होने वाला तनाव भी कम होगा, साथ ही उच्च शिक्षा के लिए बाहर जाने की होड़ भी कम होगी। शिक्षण संस्थाओं में थोड़ा सा निवेश, ढेर सारा मुनाफा देश को देगा, यह सीधा सा गणित सरकार शायद समझना ही नहीं चाहती। और इस वक्त बहुलतावाद का शिकार समाज भी इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। बल्कि समाज नफरत और हिंसा की भाषा सुनते–सुनते काफी हद तक संवेदनहीन भी हो चुका है।

इस आलेख में सबसे पहले अंग्रेजी में जो पंक्तियां लिखी गई, दरअसल वही निहारिका का सुसाइड नोट है। यह नोट सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने बच्चों के भविष्य की चिंता जतलाते हुए पोस्ट किया। परिपक्व और संवेदनशील समाज ऐसी बातों को पढ़कर भीतर तक हिल जाता है, लेकिन यह देखकर हैरानी हुई कि इस नोट में लोगों ने अंग्रेजी व्याकरण की गलतियां निकालते हुए उसका मजाक बनाना शुरु कर दिया। ऐसी अंग्रेजी लिखकर तो कभी इंजीनियर नहीं बन सकती थी, ऐसी टिप्पणियां की जाने लगीं। हालांकि इसमें हैरान नहीं होना चाहिए था, क्योंकि ये बातें उसी चुटकुले की तरह हैं, जो प्रधानमंत्री मोदी ने एक न्यूज चैनल के कार्यक्रम में सुनाई थी कि एक लड़की ने आत्महत्या करने से पहले चि–ी लिखी, तो उसके प्रोफेसर पिता ने उसमें स्पेलिंग की गलतियां निकाल लीं। श्री मोदी के इस चुटकुले पर कार्यक्रम में उपस्थित नेता, ग्लैमरस पत्रकार और अधिकारी ठहाका मारकर हंसे थे। जब गंभीर मुद्दों को हंसी–खेल की बात बनाते हुए ही देश को चलाया जा रहा हो, वहां क्या उम्मीद रखी जाए। आत्महत्या तो जनवरी 2016 में रोहित वेमुला ने भी की थी और उनका सुसाइड नोट या आखिरी खत अंग्रेजी में था। जिसमें उन्होंने लिखा था कि –'मुझे विज्ञान से प्यार था, सितारों से, प्रकृति से, लेकिन मैंने लोगों से प्यार किया और ये नहीं जान पाया कि वो कब के प्रकृति को तलाक़ दे चुके हैं। हमारी भावनाएं दोयम दर्जे की हो गई हैं। हमारा प्रेम बनावटी है। हमारी मान्यताएं झूठी हैं। ज.एक आदमी की क़ीमत उसकी तात्कालिक पहचान और नज़दीकी संभावना तक सीमित कर दी गई है। एक वोट तक। आदमी एक आंकड़ा बन कर रह गया है। एक वस्तु मात्र। कभी भी एक आदमी को उसके दिमाग से नहीं आंका गया' मेरे लिए आंसू न बहाए जाएं। आप जान जाएं कि मैं मर कर खुश हूं जीने से अधिक।' सोचने की बात है कि कितना विवश महसूस करता होगा कोई, जब वह जीने से अधिक मरने में खुशी महसूस करे। रोहित वेमुला के इस आखिरी खत में ऐसी कई झकझोरने वाली बातें लिखी हैं। उन्होंने लिखा था कि वे कार्ल सगान की तरह विज्ञान लेखक बनना चाहते थे, लेकिन लिख पाए तो केवल आत्महत्या से पहले का यह खत। अंग्रेजी के सही व्याकरण और उम्दा अभिव्यक्ति में लिखे इस खत और चार पंक्तियों में गलत अंग्रेजी में लिखे आत्महत्या के नोट में आखिर क्या अंतर है। दोनों ही सम्मानजनक जीवन और उम्मीदों की अर्थी निकालने का ऐलान कर रहे हैं। समाज को सुना रहे हैं–राम नाम सत्य है, सबकी यही गत है।

नीतीश के फैसले से जद (यू) का भविष्य अंधकारमय

नीतीश और भाजपा की साझेदारी कितने समय तक चलेगी। वे आगामी लोकसभा चुनाव तक साथ मिलकर काम कर सकते हैं

नीतीश और भाजपा की साझेदारी कितने समय तक चलेगी। वे आगामी लोकसभा चुनाव तक साथ मिलकर काम कर सकते हैं, लेकिन उसके बाद क्या होगा यह अनिश्चित है। भारतीय जनता पार्टी केवल लोकसभा चुनावों तक नीतीश का समर्थन कर सकती है और उसके बाद उनका समर्थन समाप्त हो सकता है। कुछ लोग सवाल करते हैं कि क्या गठबंधन 2025 के बिहार विधानसभा चुनावों तक जारी रहेगा? बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार में सत्तारूढ़ महागठबंधन को छोड़कर एनडीए में वापसी का बम फोड़ दिया। उन्होंने इंडिया विपक्षी गठबंधन भी छोड़ दिया, जिसे उन्होंने आठ महीने पहले बनाने की पहल की थी। इससे इंडिया गठबंधन को एक बड़ा महत्वपूर्ण झटका लगा है। राष्ट्रीय स्तर पर इंडिया ब्लॉक ने भाजपा को आगामी लोकसभा चुनाव में हराने का एक मौका गंवा दिया लगता है।

यह तलाशने लायक है कि बिहार की राजनीति राष्ट्रीय परिदृश्य को कैसे प्रभावित कर सकती है। कुमार के एन.डी.ए. में लौटने के निर्णय से भाजपा को राजनीतिक लाभ हो सकता है और इससे बिहार में राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) और कांग्रेस कमजोर भी हो सकती है। यह अंततः राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी गुट को प्रभावित कर सकता है। यह भाजपा–जद(यू) साझेदारी भाजपा की चुनावी संभावनाओं में सुधार कर सकती है जिससे आगामी 2024 के आम चुनावों में भाजपा और एनडीए को अधिक सीटें मिल सकती हैं और मोदी को जीत की हैट्रिक हासिल करने में भी मदद मिल सकती है। भाजपा ने स्पष्ट रूप से विपक्षी गठबंधन को तोड़ने और जद(यू) गठबंधन के साथ साझेदारी करने की कोशिश की है। पार्टी बिहार में नीतीश कुमार को एक महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में देखती है और मानती है कि उनकी साझेदारी 2024 के चुनावों में जीत हासिल करा सकती है। मौजूदा विधानसभा में कुमार के पास केवल 45 सीटें हैं, जबकि राजद और भाजपा के पास क्रमशः 79 और 78 सीटें हैं। इसके बावजूद नीतीश मुख्यमंत्री बने रहने में कामयाब रहे।

क्या नीतीश कुमार के इंडिया गठबंधन छोड़ने में कांग्रेस पार्टी का हाथ था? इस झटके के पीछे की वजह नीतीश को किनारे करने और कांग्रेस को आगे बढ़ाने का फैसला था। कुमार ने कांग्रेस पार्टी पर इंडिया गठबंधन के असफल होने के लिए जिम्मेदार होने का आरोप लगाया और तर्क दिया कि संवादहीनता की स्थिति के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई। जनता दल–यूनाइटेड (जद–यू) के प्रवक्ता के सी त्यागी ने कांग्रेस पार्टी पर विपक्षी गुट पर हावी होने की साजिश रचने का आरोप लगाया है। 13 जनवरी को मुंबई में सीपीआई (एम) महासचिव सीताराम येचुरी ने नीतीश कुमार को ब्लॉक के संयोजक के रूप में प्रस्तावित किया। इस सुझाव का उपस्थित अधिकांश अन्य नेताओं ने समर्थन किया। हालांकि, राहुल गांधी ने अपनी असहमति जताई। बाद में ममता बनर्जी ने गठबंधन प्रमुख के रूप में कांग्रेस प्रमुख खड़गे का नाम प्रस्तावित किया, त्यागी का दावा है कि यह एक व्यापक साजिश का हिस्सा था।

त्यागी ने कहा कि नीतीश कुमार ने एक गठबंधन बनाया जो सभी गैर–कांग्रेसी दलों को एकजुट करता है। हालांकि, अब यह विघटित हो रहा है। पंजाब और बिहार में स्थिति खराब होने की कगार पर है और पश्चिम बंगाल में भी इंडिया गुट टूट रहा है। नीतीश कुमार ने पुष्टि की कि उन्होंने इंडिया गठबंधन छोड़ दिया है क्योंकि यह गठबंधन उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। उन्हें लगा कि गठबंधन के लक्ष्यों की दिशा में काम करने वाले वे एकमात्र व्यक्ति हैं। हालांकि इस साझेदारी ने सभी गैर–कांग्रेसी दलों को एक साथ ला दिया, लेकिन गठबंधन बिहार में बिखर गया और पंजाब और बंगाल में लगभग ध्वस्त हो गया।

एक अनकही कहानी भी है। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता लालू यादव ने नीतीश कुमार को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के लक्ष्य के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक विपक्षी गठबंधन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस योजना का मकसद लालू यादव के बेटे के लिए बिहार का मुख्यमंत्री बनने का रास्ता साफ करना था। हालांकि, यह योजना तब विफल हो गई जब मल्लिकार्जुन खड़गे को नये गठबंधन के नेता के रूप में चुना गया। नतीजतन, नीतीश कुमार ने बेहतर भविष्य के लिए भाजपा के साथ गठबंधन करने का फैसला किया। नतीजों की परवाह किये बिना सत्ता पर काबिज रहने की उनकी अटूट इच्छा के कारण कुमार की विश्वसनीयता धूमिल हो गई है। उन्होंने हमेशा अपने फायदे के लिए कई बार राजनीतिक निष्ठाएं बदली हैं और वर्तमान में उनके पास बिहार में सबसे लंबे कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री का खिताब है।

नीतीश का ट्रैक रिकॉर्ड बताता है कि 2013 में दूसरे विकल्प तलाशने के बाद नीतीश कुमार ने भाजपा छोड़ दी और राजद तथा कांग्रेस से गठबंधन किया। 2019 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने फिर से भाजपा के साथ गठबंधन किया, और 2020 में फिर मुख्यमंत्री बने। हालांकि, दो साल बाद कुमार ने भाजपा छोड़ दी और राजद के साथ मिलकर नई सरकार बनाई। अब उन्होंने राजद का साथ भी छोड़ दिया है, इसीलिए उन्हें पलटू राम भी कहा जा रहा है। एक अनुभवी राजनेता होने के कारण 72 वर्षीय नीतीश कुमार को विपक्ष की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में देखा जा रहा था, परन्तु बार–बार पलटी मारने की उनकी आदत के कारण उन्हें ऐसा मौका खोना पड़ा है।

भाजपा द्वारा इंडिया गठबंधन को ख़त्म करने से प्रधानमंत्री मोदी को अपना तीसरा कार्यकाल जीतने में मदद मिल सकती है। फिर भी बिहार में ओ.बी.सी. समुदायों को संगठित करना चुनावी सफलता हासिल करने के लिए आवश्यक है। नवंबर 2023 में बिहार ने अनुसूचित जाति और अत्यंत पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण भी बढ़ाया है। यह स्पष्ट नहीं है कि नीतीश और भाजपा की साझेदारी कितने समय तक चलेगी। वे आगामी लोकसभा चुनाव तक साथ मिलकर काम कर सकते हैं, लेकिन उसके बाद क्या होगा यह अनिश्चित है। भारतीय जनता पार्टी केवल लोकसभा चुनावों तक नीतीश का समर्थन कर सकती है और उसके बाद उनका समर्थन समाप्त हो सकता है। कुछ लोग सवाल करते हैं कि क्या गठबंधन 2025 के बिहार विधानसभा चुनावों तक जारी रहेगा? नीतीश ने दिखा दिया है कि चतुराई से सत्ता बरकरार रखना संभव है, तथा सौदेबाजी के कौशल से कुछ सीटें जीतना भी संभव है, भले ही मतदाताओं का केवल 4 फीसदी उनकी जाति से हो। लेकिन एक बात निश्चित हैः नीतीश के ट्रैक रिकॉर्ड को देखते हुए कहा जा सकता है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आगे भी पलटी मार सकते हैं।

लखनऊ में आज सीएसआईआर–केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान द्वारा आयोजित 'किसान मेला–2024' में सम्मिलित हुआ।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के विजन के अनुरूप आज जो अन्नदाता किसान परंपरागत खेती के अलावा अन्य खेती भी कर रहे हैं, उन्हें दोगुने से अधिक लाभ प्राप्त हो रहा है। विभिन्न राज्यों से पधारे किसान बंधुओं का 'नए उत्तर प्रदेश' में हार्दिक स्वागत व अभिनंदन एवं मेला आयोजकों को हार्दिक बधाई!

लोकसभा चुनाव में गोरखपुर से ताल ठोंक रही हैं काजल

राजनीति से पहले फिल्मी पर्दे पर दिखाया है दम

एंटरटेनमेंट डेस्क। फिल्मी हस्तियों का राजनीति के मैदान में उतरना कोई नई बात नहीं है। दशकों से ऐसा होता आ रहा है। बॉलीवुड के कई स्टार्स राजनीति में उतर चुके हैं तो भोजपुरी इंडस्ट्री भी इससे अछूती नहीं है। मनोज तिवारी, रवि किशन और दिनेश लाल याद 'निरहुआ' कई नामी सितारे राजनीति में सक्रिय हैं। इनके अलावा एक नाम और है और वो हैं काजल निषाद। काजल निषाद लोकसभा चुनावों में समाजवादी पार्टी के टिकट पर उत्तर प्रदेश की गोरखपुर सीट से ताल ठोकने जा रही हैं। इससे पहले काजल अभिनय की दुनिया में दमखम दिखा चुकी हैं। आइए जानते हैं उनके बारे में...

काजल निषाद की फिल्मों से राजनीति तक की यात्रा काफी फिल्मी है। काजल निषाद का जन्म गुजरात के कच्छ में हुआ, लेकिन वह करियर के लिए मुंबई आ गईं और यहीं फिल्मों और टीवी शो में काम किया। वर्ष 2009 में उन्होंने 'लापतागंज' शो में 'चमेली' के रोल से करियर की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने भोजपुरी सिनेमा का रुख किया। उनकी पहली भोजपुरी फिल्म 'शादी ब्याह' थी। इसके बाद उनका पर्दार्पण राजनीति में हुआ।

करियर के दौरान काजल की मुलाकात भोजपुरी फिल्मों के प्रोड्यूसर संजय निषाद से हुई और दोनों ने शादी कर ली। संजय गोरखपुर के भौवापार में रहने वाले हैं। काजल ने अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत कांग्रेस पार्टी के साथ की। लेकिन, फिलहाल में समाजवादी पार्टी का हिस्सा हैं। समाजवादी पार्टी ने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर दी है। पार्टी ने सदर लोकसभा सीट से एक बार फिर काजल निषाद पर दांव लगाया है।

काजल निषाद

काजल ने पहली बार विधानसभा चुनाव 2012 में कांग्रेस के टिकट पर गोरखपुर ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र से किस्मत आजमाई थी, लेकिन वे हार गईं। इसके बाद वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने काजल निषाद को कैपियरगंज विधानसभा सीट से प्रत्याशी बनाकर मैदान में उतारा। पार्टी को निषाद वोट बैंक पर भरोसा था लेकिन, भाजपा प्रत्याशी और पूर्व मंत्री फतेह बहादुर सिंह ने हरा दिया। वर्ष 2023 में हुए निकाय चुनावों में भी सपा ने उन्हें गोरखपुर महापौर के पद के लिए टिकट देकर भरोसा जताया। लेकिन वे हार गईं। कहा जा रहा है कि एक बार फिर सपा ने काजल पर दांव लगाकर यादव–मुस्लिम और निषाद वोट बैंक पर निशाना साधा है। काजल के फिल्मी सफर की बात करें तो वे 'तोता वेड्स मैना' में राम कटोरी चाची की भूमिका से दर्शकों के बीच लोकप्रिय रही हैं। इसके अलावा उन्होंने कलर्स के शो 'इश्क का रंग सफेद' में कनक त्रिपाठी का किरदार भी बखूबी निभाया।

दहेज की कार बुकिंग पर, पत्नी गई आटो से तो लौटी ही नही बोली–अब नहीं आऊंगी

गोरखपुर। महिला थाना परिसर में स्थित परिवार परामर्श केंद्र दिन–रात एक कर लोगों के परिवार को जोड़ने की कोशिश करता रहता है। इस कड़ी में कुछ के बिखरे परिवार जुड़ जाते हैं तो कुछ घर कई काउंसिलिंग के बाद भी अपने रिश्तों को सुधार नहीं पाते और कोर्ट चले जाते हैं। पिता ने रिश्तों को संजोने के लिए बेटी को शादी में कार उपहार में दिया, लेकिन अब वहीं कार रिश्तों को तोड़ने के कगार पर पहुंचा दी है। पति अपने आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कार को टैक्सी में चला दिया है, बस यही बात पत्नी को खटकने लगी है। उसने फैसला सुना दिया कि अब ससुराल नहीं आऊंगी।

एक दिन पत्नी को रिश्तेदारी में ऑटो से जाना पड़ा और इसके बाद ही उसने पति के सामने कार को टैक्सी पर न चलाने की शर्त रख दी। पति नहीं माना तो वह रिश्तों को तोड़ते हुए थाने पहुंच गई और फोन करके बता दिया कि अब मैं ससुराल नहीं आऊंगी, मुझे साथ रहना ही नहीं है। मामला परामर्श केंद्र में गया तो काउंसलर रिश्तों को जोड़ने की कोशिश में लग गए हैं। फिलहाल, एक कोशिश असफल हो चुकी है, लेकिन अब भी प्रयास यही है कि गृहस्थी को उजड़ने से बचा लिया जाए।

करीब छह महीने पहले एक महिला की शादी चिलुआताल इलाके में हुई थी। बेटी–दामाद खुश रहे और नए जीवन को खुशहाल बनाए, इसी सोच से बेटी को दहेज में कार दी गई। शादी के बाद शुरुआत में तो सब कुछ ठीक रहा, लेकिन दो महीने बाद ही रिश्तों में कार की वजह से खटास आ गई। पति ने आर्थिक मजबूरियों की वजह से कार को टैक्सी में लगा दिया। सोच थी कि किसी तरह से घर में कुछ रुपये अतिरिक्त आएंगे तो जिंदगी और खुशहाल होगी।

नई नवेली दुल्हन ने शुरुआत में इसका विरोध नहीं किया, लेकिन एक दिन जब उसे रिश्तेदार के घर ऑटो से जाना पड़ा तो उसे यह बात खटक गई। उसने करीब एक महीने पहले पति से कह दिया कि उसकी कार पिता ने उसके चलने के लिए दी है, अब ये टैक्सी में नहीं चल सकती। पति ने इन्कार कर दिया तो अब रिश्ता तोड़ने के लिए प्रार्थनापत्र देते हुए पत्नी मायके चली गई है।

रिश्तों को बसाने की कोशिश करता है परामर्श केंद्र

महिला थाना परिसर में स्थित परिवार परामर्श केंद्र दिन–रात एक कर लोगों के परिवार को जोड़ने की कोशिश करता रहता है। इस कड़ी में कुछ के बिखरे परिवार जुड़ जाते हैं तो कुछ घर कई काउंसिलिंग के बाद भी अपने रिश्तों को सुधार नहीं पाते और कोर्ट चले जाते हैं। परिवारिक विवाद के निपटारे के लिए बनाया गया केंद्र पूरे उत्साह के साथ हर केस को लेता है और धैर्य के साथ सबके मुद्दों को सुनाता है और सभी पक्षों पर विचार कर अपना सुझाव देता है। यहां पर पति–पत्नी, सास–बहू से लेकर मायके वालों की दखलंदाजी जैसे मुद्दों पर अनेक केस आते रहते हैं।

डीडीयू समाजशास्त्र विभाग प्रो. संगीता पांडेय ने कहा कि स्त्री को धन इसलिए दिया जाता है कि परिवार के मुश्किल हालात में इस्तेमाल कर सकें। लेकिन, आज ये दहेज का रूप ले चुका है। पहले ही लड़कियों को समझाया जाता है कि यह सामान तुम्हारे सुख के लिए है। आजकल शिक्षित लोग इस तरह की बात ज्यादा करते हैं। अपने अधिकार को जानना अच्छा है पर उसका प्रदर्शन करना उचित नहीं, संपत्ति दंपती के लिए है ना कि किसी एक के लिए। मनोचिकित्सक आकृति पांडेय ने कहा कि परिवार के सभी सदस्यों का समय अलग–अलग होता है तो घर का काम करने की कोशिश पूरे परिवार को करनी चाहिए।

परिवार के लोगों को चाहिए कि अगर बहू काम नहीं करना चाहती तो कारण जरूर पूछे। परिवार के सभी लोगों को मिलजुलकर काम करना चाहिए। अधिकरत झगड़े बातचीत की कमी से होते हैं। परिवार के सभी सदस्यों को लगातार बातचीत करनी चाहिए।

ट्रक फाइनेंस कराकर की थी जालसाजी, अब रुद्रांश गया जेल, तीन बैंक कर्मियों को नोटिस

गोरखपुर। एसएसपी डॉ. गौरव ग्रोवर ने कहा कि एक फाइनेंस कंपनी की ओर से ट्रक फाइनेंस कराकर जालसाजी का मामला सामने आया है। एएसपी को जांच सौंपी गई है। जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। बैंक की ओर से भी जानकारियां आई हैं। गोरखपुर में फर्जी दस्तावेज पर आईसीआईसीआई बैंक से 4.45 करोड़ रुपये के ऋण की जालसाजी के आरोपी रुद्रांश पांडेय की एक और जालसाजी का मामला सामने आया गया। टाटा फाइनेंस की ओर से एसएसपी को प्रार्थनापत्र देकर ट्रक फाइनेंस कराकर जालसाजी की जानकारी दी गई। बताया गया कि रियाज नाम से एक ट्रक का 39 लाख रुपये में फाइनेंस कराया गया और फिर रकम जमा नहीं की गई। एसएसपी ने इसकी भी जांच एएसपी को सौंपी है। उधर, 36 घंटे का रिमांड पूरा होने पर आरोपी रुद्रांश पांडेय को फिर से सोमवार की शाम जेल में दाखिल कर दिया गया।

आरोपी रुद्रांश से पूछताछ में सामने आए बैंक कर्मचारियों की भूमिका की भी पुलिस जाकर जांच की और अब एक–एक कर सभी को पूछताछ के लिए बुलाना भी शुरू कर दिया। बैंक की ओर से पुलिस को पूरी जानकारी दे दी गई है। बैंक ने यह भी बताया है जिन तीन कर्मचारियों की भूमिका संदिग्ध है, उन्हें बैंक ने निलंबित करते हुए नोटिस भी जारी कर दिया है। अब इसी के साथ पुलिस ने जांच और तेज कर दी है।

ताजा मामला में टाटा फाइनेंस की ओर से वैभव श्रीवास्तव ने मंगलवार को एसएसपी को प्रार्थनापत्र दिया है। उनका कहना है कि करीब दो साल पहले रियाज नाम से एक ट्रक का फाइनेंस कराया गया। कुछ रुपये तो जमा किए गए, लेकिन उसके बाद मौके पर जाने पर पता ही गलत पाया गया। इसके बाद कई नोटिस देने पर भी कोई जवाब नहीं आया है। वैभव ने एसएसपी को यह भी बताया कि वह रियाज के मामले की जानकारी होने के बाद आए हैं, नहीं तो कंपनी का रुपये को डूबा समझ रहे थे।

अब एसएसपी ने इस प्रकरण की भी जांच रुद्रांश पांडेय की जांच कर रहे एएसपी को सौंप दी है। पता चला है कि ये जालसाजी बैंक रोड की शाखा से की गई है। कुछ और ट्रकों के फाइनेंस कराकर जालसाजी की बात भी सामने आई है, जिसकी गहनता से जांच अब पुलिस ने शुरू कर दी है।

ठंड में बढ़ गए ब्रेन स्ट्रोक के मामले

नहाते वक्त न करें भूलकर भी ये गलती, डाक्टरों ने बताए बीमारी के लक्षण

संवाददाता, गोरखपुर। जनवरी में तेज ठंड पड़ने की वजह से ब्रेन स्ट्रोक (पक्षाघात) के रोगियों की संख्या लगभग चार गुना बढ़ गई है। इसमें 60 प्रतिशत रोगी ग्रामीण क्षेत्र के हैं। इनमें से लगभग 80 प्रतिशत को पता ही नहीं था कि उन्हें उच्च रक्तचाप व मधुमेह की बीमारी है। ठंडे पानी से नहाकर घर या पूजा घर में बैठे और थोड़ी देर बाद बेहोश हो गए। जब स्वजन उन्हें अस्पताल ले गए तो पता चला ब्रेन स्ट्रोक है। उनका उच्च रक्तचाप 200–110 मिलीमीटर मरकरी व मधुमेह का स्तर तीन सौ एमजी के आसपास मिला। जो सामान्य से बहुत ज्यादा है। तेज पड़ रही ठंड में ब्रेन स्ट्रोक के मामले बढ़ गए हैं।

हर रोज पहुंच रहे मरीज

बीआरडी मेडिकल कॉलेज के सुपर स्पेशियलिटी ब्लाक में प्रतिदिन 12–13 रोगी पहुंच रहे हैं। नवंबर–दिसंबर में इनकी संख्या प्रतिदिन दो–तीन होती थी। निजी अस्पतालों में भी इनकी संख्या में वृद्धि हुई है।

क्या होता है ब्रेन स्ट्रोक

विशेषज्ञों के अनुसार मधुमेह व उच्च रक्तचाप के रोगियों में इसका खतरा ज्यादा है। क्योंकि ठंड में नसें सिकुड़ जाती हैं, इस वजह से रक्तचाप बढ़ जाता है और उसकी वजह से दिमाग की कमजोर नसें फट जाती हैं। अभी तक ब्रेन स्ट्रोक जितने रोगी पहुंचे, उनकी उम्र 40 वर्ष से अधिक है। विशेषज्ञों ने सलाह दी है कि हृदय व रक्तचाप के रोगी दवाओं का नियमित सेवन करते रहें। ठंड से बचकर रहें।

यह हैं लक्षण

बोली में लड़खड़ाहट, शरीर के एक तरफ के हिस्से में कमजोरी, आधे चेहरे, एक तरफ के हाथ–पैर में कमजोरी
एक तरफ के हाथ–पैर का काम न करना
सिर में तेज दर्द
उल्टी और चक्कर आना
भ्रम की स्थिति होना
सांस लेने में दिक्कत
बेहोशी

इसका रखें ध्यान

हृदय, रक्तचाप व मधुमेह के रोगी धूप निकलने पर ही टहलने जाएं
कमरे से बाहर निकलें तो गर्म कपड़े पहने रहें
बिस्तर छोड़ने के बाद थोड़ा व्यायाम अवश्य करें
सिर, हाथ–पैर अच्छी तरह ढंक कर ही बाहर निकलें
रक्तचाप की नियमित जांच कराएं
कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित रखें
भोजन में नमक की मात्रा सीमित रखें
ठंडे पानी से न नहाएं

60 प्रतिशत लोगों को पता नहीं था कि उन्हें उच्च रक्तचाप व मधुमेह है
बढ़ गई है ब्रेन स्ट्रोक के रोगियों की संख्या

तेज पड़ रही ठंड में चार गुना बढ़ गई है ब्रेन स्ट्रोक के रोगियों की संख्या
लगभग 60 प्रतिशत रोगी ग्रामीण क्षेत्र से आ रहे हैं। इनमें ज्यादातर को पता ही नहीं था कि उन्हें उच्च रक्तचाप व मधुमेह की बीमारी है। उन्होंने कभी जांच ही नहीं कराई थी। ठंड में अचानक रक्तचाप बढ़ा और ब्रेन स्ट्रोक हो गया। अनेक तो बहुत गंभीर अवस्था में आए थे, जिन्हें बचाया नहीं जा सका। डा. त्रिपुरारी पांडेय, न्यूरो सर्जन, बीआरडी मेडिकल कालेज

डाक्टरों ने कही ये बात

उच्च रक्तचाप व रक्त में शर्करा की मात्रा अधिक होने से मस्तिष्क में रक्त और ऑक्सीजन की आपूर्ति करने वाली धमनियों में अवरोध उत्पन्न होता है, जिसकी वजह से स्ट्रोक हो सकता है। तेज पड़ रही ठंड में उच्च रक्तचाप एवं मधुमेह का नियमन एवं व्यायाम कर स्ट्रोक से बचा जा सकता है। डा. पवन सिंह, न्यूरो फिजिशियन

छह डाक्टरों को मिली पदोन्नति

शासन ने प्रांतीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा संवर्ग के लेवल दो के छह डॉक्टरों की पदोन्नति कर दी है। अब वे लेवल तीन के डॉक्टर हो गए हैं। यह पदोन्नति 10 फरवरी से लागू होगी। इसके साथ ही उनका वेतनमान भी बढ़ जाएगा। वे वर्तमान तैनाती स्थल पर ही बने रहेंगे। सीएमओ डा. आशुतोष कुमार दूबे ने बताया कि पदोन्नति पाने वाले डॉक्टरों में डा. मनीष कुमार चौरसिया, डा. सचिन कुमार गुप्ता, डा. प्रदीप त्रिपाठी, डा. राजेश कुमार बरनवाल, डा. शैलेंद्र कुमार मिश्रा, डा. सतीश कुमार सिंह शामिल हैं।

गांवों में अब दो महीने में मिलेगा बिजली का बिल

व्यवस्था पूरी तरह होगी प्रीपेड

सभी का बिल न बन पाने और गड़बड़ियों को देखते हुए लिया गया निर्णय
जल्द लागू होगी व्यवस्था, ग्रामीण क्षेत्र के उपभोक्ताओं को मिलेगा लाभ

ग्रामीण क्षेत्र में इसी साल से स्मार्ट मीटर लगाने की तैयारी है। इसके लिए जीनस कंपनी को ठेका भी मिल चुका है। ग्रामीण क्षेत्र में उपभोक्ताओं को दो महीने में बिजली का बिल मिलेगा। अभियंताओं का कहना है कि आने वाले कुछ वर्षों में बिजली व्यवस्था पूरी तरह प्रीपेड हो जाएगी। इसके बाद मीटर रीलडग के झंझट और बकाया बिल जमा कराने के लिए मशक्कत से छुटकारा मिल जाएगा।

संवाददाता, गोरखपुर। ग्रामीण क्षेत्र के बिजली उपभोक्ताओं के लिए राहत भरी खबर है। अब इन उपभोक्ताओं को दो महीने में बिजली का बिल मिलेगा। अभी एक महीने में मीटर रीडिंग के आधार पर बिल बनाने की व्यवस्था थी। इससे सभी उपभोक्ताओं को समय से बिजली का बिल तो मिलेगा ही बिल की गड़बड़ियों में भी काफी कमी आएगी।शहर की तरह ग्रामीण क्षेत्र के बिजली कनेक्शनों पर अब मीटर लगाए जा चुके हैं। इसी मीटर की रीडिंग के आधार पर बिल बनाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में मीटर रीडर घर–घर पहुंचकर बिल बनाते हैं लेकिन इनकी संख्या कम होने के कारण सभी के बिल नहीं बन पाते थे।

ज्यादातर मीटर रीडर घर बैठे बिल बना देते थे इस कारण बिल भी गलत हो जाते हैं। इसे ठीक कराने के लिए उपभोक्ताओं को काफी भागदौड़ करनी पड़ती है। इसे देखते हुए बिजली निगम ने नई व्यवस्था बनायी है।

स्मार्ट मीटर लगाने की भी तैयारी तेज

ग्रामीण क्षेत्र में इसी साल से स्मार्ट मीटर भी लगाने की तैयारी है। इसके लिए जीनस कंपनी को ठेका भी मिल चुका है। कंपनी एक–एक कनेक्शन की जियो टैगिंग कराकर मीटर लगाएगी। इस स्मार्ट मीटर का इस्तेमाल पोस्टपेड व प्रीपेड दोनों तरह से किया जा सकेगा। अभियंताओं का कहना है कि आने वाले कुछ वर्षों में बिजली व्यवस्था पूरी तरह प्रीपेड हो जाएगी। इसके बाद मीटर रीडिंग के झंझट और बकाया बिल जमा कराने के लिए मशक्कत से छुटकारा मिल जाएगा। फिलहाल स्मार्ट मीटर लगने के बाद हर महीने बिजली के बिल का संदेश दर्ज मोबाइल नंबर पर आ जाएगा।

गोरखपुर ग्रामीण में हैं 6.50 लाख उपभोक्ता

गोरखपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के छह खंडों में उपभोक्ताओं की संख्या साढ़े छह लाख से ज्यादा है। इनके परिसर में मीटर रीडिंग की जिम्मेदारी निजी एजेंसी को दी गई है।

साहब! सरकारी नौकरी का भूत सवार था, गंवा दिए 17.50 लाख

गोरखपुर। दोनों ने फर्जी नियुक्ति पत्र भी दिया था, दिल्ली जाने पर पता चला कि वह फर्जी है। एसएसपी के आदेश पर कैंट थाने में चौरीचौरा के छबैला गांव निवासी मदन मोहन मल्ल व सुनील मल्ल पर कूटरचित दस्तावेज तैयार कर जालसाजी करने का केस दर्ज किया गया है। कैंट थाने में चौरीचौरा के रहने वाले सगे भाइयों पर नौकरी के नाम पर 17.50 लाख रुपये हड़पने का केस दर्ज किया गया। पीड़ित मोहित जालान का कहना है कि उन्हें सरकारी नौकरी का भूत सवार हुआ तो लोगों से संपर्क करने लगे। इसी दौरान मामा के घर के पास मिले दो भाइयों ने नौकरी दिलाने के नाम पर 17.50 लाख रुपये लेकर हड़प लिया।

आरोप है कि दोनों ने फर्जी नियुक्ति पत्र भी दिया था, दिल्ली जाने पर पता चला कि वह फर्जी है। एसएसपी के आदेश पर कैंट थाने में चौरीचौरा के छबैला गांव निवासी मदन मोहन मल्ल व सुनील मल्ल पर कूटरचित दस्तावेज तैयार कर जालसाजी करने का केस दर्ज किया गया है। जानकारी के मुताबिक, कैंट इलाके के बेतियाहाता निवासी मोहित जालान ने दी तहरीर में लिखा है कि नौकरी की तलाश के दौरान ही वह अक्तूबर 2023 में कुछ जरूरी काम से अपने ननिहाल मुंडेरा बाजार गया था, जहां मामा के लड़के पीयूष खेतान से वहीं का निवासी मदन मोहन मल्ल लेन–देन करते उनके दुकान पर देखा गया, जिससे जान पहचान हो गई, फिर वह मेरे नाम पते का विवरण लेकर कहा कि मेरा और मेरे भाई सुनील मल्ल का अक्सर गोरखपुर आना–जाना रहता है, मैं आपसे जरूर मिलूंगा।

करीब दो दिन बाद दोनों भाई अचानक घर पहुंच गए व चाय–नाश्ता करने के बाद बोले कि आप के पास सब कुछ है कमी है तो सरकारी नौकरी की, आप इसके लिए प्रयास क्यों नहीं कर रहे हैं। मेरे द्वारा यह कहने पर कि मेरी भी यही तमन्ना है। आरोपियों ने कहा, आप चिंता छोड़कर रुपये की व्यवस्था में लग जाइए, हम लोग भारतीय खाद्य निगम में सहायक लिपिक पद पर इसी वर्ष आप की नौकरी लगवा देंगे। इसके लिए 20 लाख रुपये की मांग की गई।

आरोप है कि 17.50 लाख रुपये वसूलने के बाद दोनों भाइयों ने पांच नवंबर 2023 को नियुक्ति पत्र दे दिया। कहा कि जाकर ज्वाइन कर लें। दिल्ली जाने पर पता चला कि नियुक्ति पत्र फर्जी है। एसपी सिटी कृष्ण कुमार बिश्नोई ने बताया कि तहरीर के आधार पर केस दर्ज कर कैंट पुलिस जांच कर रही है। साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

धूप खिलने से भ्रम में न आएं, रात में ठंड से रहें सतर्क

गोरखपुर। डॉ. राजीव कुमार जायसवाल ने बताया कि मौसम में उतार–चढ़ाव का दौर जारी है। ऐसे में खास तौर पर बुजुर्ग व बच्चों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। थोड़ी सी लापरवाही बीमार कर सकती है। ऐसे मौसम में हार्ट, दमा आदि के मरीजों को विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए। गोरखपुर जिले में लगातार कड़ाके की ठंड के बाद दो दिन से धूप निकलने से राहत मिली है। धूप निकलने से दिन का तापमान तो चढ़ रहा है लेकिन रात में तापमान गिरने से ठंड सताने लग रही है। दो दिन से अधिकतम और न्यूनतम तापमान में करीब चार गुना का अंतर देखा गया। ऐसे में तापमान में उतार चढ़ाव का सीधा असर लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। थोड़ी सी भी लापरवाही करने वाले सर्दी, खांसी, जुकाम व बुखार की चपेट में आ जा रहे हैं। ऐसे में दिन में धूप के बहकावे में लोग रात में भी लापरवाही बरत रहें, जो उनके स्वास्थ्य पर भारी पड़ रही है।

मौसम विभाग ने मंगलवार को अधिकतम तापमान 23 व न्यूनतम तापमान 5.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया। दिन में चटक धूप के बाद शाम होते ही तापमान लुढ़क जा रहा है। रात में तापमान कम होने से ठंड सताने लग रही है। ऐसे में लापरवाही बरतने वाले लोगों पर भारी पड़ रहा है। दिन में कम ऊनी कपड़े पहनने के बाद शाम होते ही लोगों को ठंड सताने लग रही है। देर शाम तक बाहर रहने वह ठंड के शिकार होकर बीमार पड़ जा रहे हैं।

न्यूनतम तापमान 5.8 डिग्री सेल्सियस रहा जो सामान्य से चार डिग्री सेल्सियस कम है। जबकि अधिकतम तापमान सामान्य के बराबर रहा। लंबे समय बाद दिन में चटक धूप निकलने पर लोग छत, पार्क में बैठक कर आनंद लेते नजर आए। डॉ. राजीव कुमार जायसवाल ने बताया कि मौसम में उतार–चढ़ाव का दौर जारी है। ऐसे में खास तौर पर बुजुर्ग व बच्चों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। थोड़ी सी लापरवाही बीमार कर सकती है। ऐसे मौसम में हार्ट, दमा आदि के मरीजों को विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए।

आज और कल बदली छाने और बारिश की संभावना

मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया कि पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता बढ़ने के कारण सतही स्तर पर हवा का रुख बदल कर पुरुवा/दक्षिणी–पूर्वी होने से वायु संचालन बढ़ गया है। जिससे वायुमंडलीय स्थिरता घटने के कारण कोहरा छंटने से धूप निकलने से ऊष्मा बढ़ने लगती है। ऐसे में अब शीत दिवस की स्थिति लगभग समाप्त हो गई।

यद्यपि उत्तरोत्तर दो सक्रिय पश्चिमी विक्षोभों के प्रभाव से मध्य क्षोभमंडलीय पछुवा हवाओं की निम्न क्षोभमंडलीय पुरवा हवाओं के साथ संभावित प्रतिक्रिया के चलते बुधवार और बृहस्पतिवार को बादल छाए रहने और हल्की से मध्यम बारिश की संभावना बन रही है। इस दौरान 30 से 40 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से हवा भी चलने की संभावना है। इसके बाद दो फरवरी को आंशिक अंतराल के बाद अगले पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से तीन व चार फरवरी को फिर कहीं–कहीं हल्की बारिश होने के आसार हैं।

विधान भवन में महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी ने संयुक्त अधिवेशन को संबोधित किया और अपने अभिभाषण के माध्यम से उत्तर प्रदेश सरकार की नीतियों एवं उपलब्धियां की चर्चा की।

अखिलेश यादव ने उठाए सवाल

प्रशांत कुमार यूपी के नए कार्यवाहक डीजीपी बने

अखिलेश यादव ने उठाए सवाल

यूपी में डीजीपी की नियुक्ति को लेकर अखिलेश यादव ने ट्वीट कर कहा कि लगता है एक बार फिर उप्र को कार्यवाहक डीजीपी मिलनेवाला है। जनता पूछ रही है कि हर बार कार्यवाहक डीजीपी बनाने का खेल दिल्ली–लखनऊ के झगड़े की वजह से हो रहा है या फिर अपराधियों के संग सत्ता की साँठगाँठ के कारण।

लखनऊ। यूपी को लगातार चौथी बार कार्यवाहक डीजीपी मिला है। स्पेशल डीजी कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार को प्रदेश का कार्यवाहक डीजीपी नियुक्त किया गया है। डीजी कानून–व्यवस्था प्रशांत कुमार को राज्य सरकार ने प्रदेश पुलिस का नया मुखिया बना दिया है। कार्यवाहक डीजीपी विजय कुमार के बुधवार को सेवानिवृत्त होने के बाद प्रशांत कुमार को यह जिम्मेदारी सौंपी गयी है। वर्ष 1990 बैच के आईपीएस प्रशांत कुमार 16 अफसरों को सुपरसीड करके कार्यवाहक डीजीपी बने हैं। बीते करीब साढ़े तीन वर्ष से वह कानून–व्यवस्था की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। इसके अलावा उनके पास ईओडब्ल्यू और स्टेट एसआईटी की जिम्मेदारी भी है। यह लगातार चौथी बार है जब यूपी में कार्यवाहक डीजीपी की नियुक्ति हुई है।

बता दें कि मूल रूप से बिहार के सीवान निवासी प्रशांत कुमार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पसंदीदा अफसरों में शामिल माना जाता है। एडीजी जोन मेरठ रहने के दौरान उन्होंने कई अपराधियों का एनकाउंटर किया था, जिसके बाद उनको एडीजी कानून–व्यवस्था बनाया गया था। तत्पश्चात उन्होंने प्रदेश के 66 माफियाओं की सूची तैयार कर कानून का शिकंजा कसना शुरू कर दिया। उनके नेतृत्व में एसटीएफ और जिलों की पुलिस ने एनकाउंटर करने का सिलसिला जारी रखा।

उल्लेखनीय है कि प्रशांत कुमार को चार बार राष्ट्रपति का वीरता पदक मिल चुका है। उन्होंने एमएससी, एमफिल और एमबीए की शिक्षा ग्रहण की है। उनकी पत्नी डिंपल वर्मा रिटायर्ड आईएएस अधिकारी हैं और वर्तमान में रेरा में सदस्य हैं।

इन अफसरों को किया सुपरसीड

मुकुल गोयल, आनंद कुमार, शफी अहसान रिजवी, आशीष गुप्ता, आदित्य मिश्रा, पीवी रामाशास्त्री, संदीप सालुंके, दलजीत सिंह चौधरी, रेणुका मिश्रा, बिजय कुमार मौर्या, सत्य नारायन साबत, अविनाश चंद्रा, संजय एम. तरडे, एमके बशाल, तनूजा श्रीवास्तव, सुभाष चंद्रा।

प्रवेश में मिलने वाला वेटेज खत्म बाहरी छात्रों को मिलेगा समान अधिकार

गोरखपुर। डीडीयू कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि विश्वविद्यालय में सभी को पढ़ाई के लिए समान अधिकार देने के उद्देश्य से परास्नातक में प्रवेश के समय मिलने वाले वेटेज को समाप्त कर दिया गया है। इसके अलावा सर्वाधिक मांग वाले स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों में एक–एक सेक्शन बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में सर्वाधिक मांग वाले स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों में सीट वृद्धि को मंजूरी मिल गई है। मंगलवार को प्रवेश समिति ने बीएससी और बीकॉम करने वालों के लिए एमए में प्रवेश का रास्ता भी खोल दिया है। परास्नातक में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को मिलने वाला वेटेज भी खत्म कर दिया है। हालांकि एनएसएस के स्वयंसेवकों, एनसीसी कैडेट्स व छात्राओं को मिलने वाला दो प्रतिशत का वेटेज जारी रहेगा।

गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन में कुलपति प्रो. पूनम टंडन की अध्यक्षता में मंगलवार को अपराह्न तीन बजे प्रवेश समिति की बैठक शुरू हुई। इसमें करीब दो घंटे से अधिक समय तक विभिन्न विषयों पर मंथन किया गया। स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों में इंजीनियरिंग के कंप्यूटर साइंस, आईटी, बीएससी कृषि, एमबीए, बीबीए और बीकॉम बैंकिंग एंड इंश्योरेंस आदि में एक–एक सेक्शन बढ़ाने पर प्रवेश समिति ने मंजूरी दे दी। इसके अंतर्गत करीब 75–75 अतिरिक्त विद्यार्थियों को प्रवेश मिल सकेगा। उल्लेखनीय है कि डीडीयू में इन विषयों की सर्वाधिक मांग है। इन पाठ्यक्रमों में एक–एक सीट के लिए बीस से तीस गुना तक अधिक आवेदन आते हैं। बीएससी और बीकॉम करने वाले विद्यार्थी अब विश्वविद्यालय में भी एमए कर सकेंगे। इसको लेकर प्रवेश समिति ने मंजूरी दे दी। सभी संकायों के विभागों से यह अपेक्षा की गई कि वे अपने बोर्ड ऑफ स्टडीज में इसे लेकर लचीला रुख अपनाएंगे।

प्रवेश समिति की बैठक में परास्नातक में प्रवेश के दौरान मिलने वाला वेटेज भी खत्म कर दिया गया है। इसके तहत विश्वविद्यालय परिसर के छात्रों को पांच प्रतिशत और संबद्ध कॉलेजों के छात्रों को दो प्रतिशत वेटेज दिया जाता था। जबकि बाहरी विश्वविद्यालयों के छात्रों को कोई वेटेज नहीं मिलता था। एनएसएस के स्वयंसेवकों, एनसीसी कैडेट्स और छात्राओं को मिलने वाला दो प्रतिशत वेटेज जारी रहेगा। बैठक में कुलसचिव प्रो. शांतनु रस्तोगी, परीक्षा नियंत्रक डॉ कुलदीप सिंह आदि मौजूद रहे।

डीडीयू कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि विश्वविद्यालय में सभी को पढ़ाई के लिए समान अधिकार देने के उद्देश्य से परास्नातक में प्रवेश के समय मिलने वाले वेटेज को समाप्त कर दिया गया है। इसके अलावा सर्वाधिक मांग वाले स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों में एक–एक सेक्शन बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। अब बीएससी व बीकॉम के बाद विद्यार्थी एमए कर सकेंगे।

प्रवेश में मिलने वाला वेटेज खत्म बाहरी छात्रों को मिलेगा समान अधिकार

गोरखपुर। डीडीयू कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि विश्वविद्यालय में सभी को पढ़ाई के लिए समान अधिकार देने के उद्देश्य से परास्नातक में प्रवेश के समय मिलने वाले वेटेज को समाप्त कर दिया गया है। इसके अलावा सर्वाधिक मांग वाले स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों में एक–एक सेक्शन बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में सर्वाधिक मांग वाले स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों में सीट वृद्धि को मंजूरी मिल गई है। मंगलवार को प्रवेश समिति ने बीएससी और बीकॉम करने वालों के लिए एमए में प्रवेश का रास्ता भी खोल दिया है। परास्नातक में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को मिलने वाला वेटेज भी खत्म कर दिया है। हालांकि एनएसएस के स्वयंसेवकों, एनसीसी कैडेट्स व छात्राओं को मिलने वाला दो प्रतिशत का वेटेज जारी रहेगा।

गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन में कुलपति प्रो. पूनम टंडन की अध्यक्षता में मंगलवार को अपराह्न तीन बजे प्रवेश समिति की बैठक शुरू हुई। इसमें करीब दो घंटे से अधिक समय तक विभिन्न विषयों पर मंथन किया गया। स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों में इंजीनियरिंग के कंप्यूटर साइंस, आईटी, बीएससी कृषि, एमबीए, बीबीए और बीकॉम बैंकिंग एंड इंश्योरेंस आदि में एक–एक सेक्शन बढ़ाने पर प्रवेश समिति ने मंजूरी दे दी। इसके अंतर्गत करीब 75–75 अतिरिक्त विद्यार्थियों को प्रवेश मिल सकेगा। उल्लेखनीय है कि डीडीयू में इन विषयों की सर्वाधिक मांग है। इन पाठ्यक्रमों में एक–एक सीट के लिए बीस से तीस गुना तक अधिक आवेदन आते हैं। बीएससी और बीकॉम करने वाले विद्यार्थी अब विश्वविद्यालय में भी एमए कर सकेंगे। इसको लेकर प्रवेश समिति ने मंजूरी दे दी। सभी संकायों के विभागों से यह अपेक्षा की गई कि वे अपने बोर्ड ऑफ स्टडीज में इसे लेकर लचीला रुख अपनाएंगे।

प्रवेश समिति की बैठक में परास्नातक में प्रवेश के दौरान मिलने वाला वेटेज भी खत्म कर दिया गया है। इसके तहत विश्वविद्यालय परिसर के छात्रों को पांच प्रतिशत और संबद्ध कॉलेजों के छात्रों को दो प्रतिशत वेटेज दिया जाता था। जबकि बाहरी विश्वविद्यालयों के छात्रों को कोई वेटेज नहीं मिलता था।

एनएसएस के स्वयंसेवकों, एनसीसी कैडेट्स और छात्राओं को मिलने वाला दो प्रतिशत वेटेज जारी रहेगा। बैठक में कुलसचिव प्रो. शांतनु रस्तोगी, परीक्षा नियंत्रक डॉ कुलदीप सिंह आदि मौजूद रहे। डीडीयू कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि विश्वविद्यालय में सभी को पढ़ाई के लिए समान अधिकार देने के उद्देश्य से परास्नातक में प्रवेश के समय मिलने वाले वेटेज को समाप्त कर दिया गया है। इसके अलावा सर्वाधिक मांग वाले स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों में एक–एक सेक्शन बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। अब बीएससी व बीकॉम के बाद विद्यार्थी एमए कर सकेंगे।

अयोध्या धाम जाने वाले श्रद्धालु गोरखपुर में कर सकेंगे विश्राम

रामघाट हाल्ट है तैयार, खाने से लेकर मिलेगी ये सुविधा

अयोध्या धाम पहुंचने वाले श्रद्धालु सरयू तट स्थित रामघाट हाल्ट स्टेशन पर भी हश्वल्ट कर सकेंगे। रामघाट हाल्ट श्रद्धालुओं के लिए सज–संवरकर पूरी तरह तैयार है। पूर्वोत्तर रेलवे का यह पहला ऐसा हश्वल्ट है जहां उच्चस्तरीय यात्री सुविधाएं उपलब्ध हैं। अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत करीब आठ करोड़ से नवनिर्मित हाल्ट स्टेशन पर रिटायलरग रूम और डारमेट्री के अलावा मल्टीफंक्शनल काम्प्लेक्स भी तैयार हैं।

संवाददाता, गोरखपुर। अयोध्या धाम पहुंचने वाले श्रद्धालु सरयू तट स्थित रामघाट हाल्ट स्टेशन पर भी हॉल्ट कर सकेंगे। श्रद्धालुओं के लिए पूर्वोत्तर रेलवे ने हॉल्ट परिसर में स्थायी शेड तैयार कर दिया है, जिसमें कम से कम 500 श्रद्धालु विश्राम कर सकेंगे। श्रद्धालु अति आधुनिक रिटायरिंग रूम और डारमेट्री में भी रात्रि विश्राम कर सकेंगे। कटरा स्टेशन पर भी एक हजार श्रद्धालुओं के लिए वाटर प्रूफ टेंट तैयार कर रहा है। रामघाट पर उतरे श्रद्धालु सरयू में डुबकी लगाकर सीधे श्रीराम मंदिर में श्रीरामलला और हनुमानगढ़ी में बजरंगबली हनुमान का दर्शन कर सकेंगे। यह दोनों मंदिर रामघाट हाल्ट से सिर्फ डेढ़ किमी की परिधि में स्थित हैं।

रामघाट हाल्ट सजकर है तैयार

रामघाट हाल्ट श्रद्धालुओं के लिए सज–संवरकर पूरी तरह तैयार है। पूर्वोत्तर रेलवे का यह पहला ऐसा हॉल्ट है, जहां उच्चस्तरीय यात्री सुविधाएं उपलब्ध हैं। अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत करीब आठ करोड़ से नवनिर्मित हाल्ट स्टेशन पर रिटायरिंग रूम और डारमेट्री के अलावा मल्टीफंक्शनल कॉम्प्लेक्स भी तैयार है, जहां देशभर से जुटने वाले श्रद्धालु जरूरी सामानों की खरीदारी भी कर सकेंगे।

श्रद्धालुओं को मिलेगी ये सुविधा

इस कांप्लेक्स में श्रद्धालुओं के लिए खानपान की व्यवस्था भी उपलब्ध रहेगी। श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए सीसी कैमरे लगाए गए हैं। स्टेशन पर पहुंचते ही वांछित सुरक्षा बलों की गिरफ्त में आ जाएंगे। हाल्ट पर ही कंट्रोल रूम स्थापित करने के साथ रेलवे सुरक्षा बलों की अतिरिक्त तैनाती सुनिश्चित कर दी गई है।

अधिकारी कर रहे हैं कैंप

श्रद्धालुओं के सहयोग के लिए पूर्वोत्तर रेलवे के मुख्यालय गोरखपुर और मंडल कार्यालय लखनऊ के उच्च अधिकारी, इंजीनियर और कर्मचारी कैंप कर रहे हैं। इनकी ड्यूटी भी लगा दी गई है। स्टेशन के नए भवन और परिसर भी राममय हो गए हैं। चारों तरफ अयोध्या की संस्कृति और परंपरा झलक रही है। रामघाट हाल्ट पर उतरते ही लग रहा है अयोध्या धाम पहुंच गए हैं। रामघाट की तरह कटरा स्टेशन को भी सुसज्जित और सुरक्षित किया जा रहा है

आस्था स्पेशल ट्रेनों का होगा ठहराव

कटरा में ही पूर्वोत्तर रेलवे के मुख्यालय गोरखपुर रूट से होकर गुजरने वाली आस्था स्पेशल ट्रेनों का ठहराव होगा। गोरखपुर रूट पर 48 आस्था स्पेशल ट्रेन का प्रस्ताव तैयार है, जिसमें हावड़ा, आसनसोल, वर्धमान, भागलपुर और मुंगेर से 33 फेरा में चलने वाली स्पेशल ट्रेनें भी शामिल हैं। गोरखपुर के रास्ते भटनी से अयोध्या धाम तक नियमित चलने वाली मेमू ट्रेन रामघाट और कटरा में भी रुकती हैं।

बजट से जुड़े भारी–भरकम शब्दों का ये है मतलब

जान गए तो बजट में हुआ एलान समझना होगा आसान

नई दिल्ली । बजट का मतलब पढ़े–लिखे आदमी के लिए भी समझना टेढ़ी खीर होता है। बजट शब्द फ्रेंच भाषा के शब्द बोजेत से बना है। इसका अर्थ होता है छोटा बैग। फ्रेंच भाषा में यह शब्द लैटिन शब्द 'बुल्गा' से लिया गया है। इसका अर्थ है 'चमड़े का थैला'। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण आज साल 2024 का अंतरिम बजट पेश करेंगी। बजट में ऐसी कई बातों और शब्दों का उल्लेख होता है, जिन्हें हम आमतौर पर सुनते हैं, समझने का अहसास भी होता है लेकिन उसकी परिभाषा और व्याख्या के बारे में हमें पता नहीं होता। आइए बजट में इस्तेमाल होने वाले ऐसे ही शब्दों के मायने सरल व आसान भाषा में समझने की कोशिया करते हैं?

क्या है बजट ?

बजट का मतलब पढ़े–लिखे आदमी के लिए भी समझना टेढ़ी खीर होता है। बजट शब्द फ्रेंच भाषा के शब्द बोजेत से बना है। इसका अर्थ होता है छोटा बैग। फ्रेंच भाषा में यह शब्द लैटिन शब्द 'बुल्गा' से लिया गया है। इसका अर्थ है 'चमड़े का थैला'। प्राचीन समय में बड़े व्यापारी अपने सारे मौद्रिक दस्तावेज एक थैले में रखते थे।

इसी तरह धीरे–धीरे इस शब्द का प्रयोग संसाधनों को जुटाने के लिए किए गए हिसाब–किताब से जुड़ गया। इस तरह सरकारों के साल भर के आर्थिक बही–खाते को नाम मिला 'बजट'। सरकार द्वारा देश का आय–व्यय लेखाजोखा पेश करने की शुरुआत ब्रिटेन से हुई थी। ब्रिटेन के वित्त मंत्री संसद में जब आय–व्यय का लेखाजोखा पेश करने आते तो संबद्ध दस्तावेज चमड़े के एक लाल बैग में रखकर लाते। उस बैग को फ्रेंच में 'बजेटी' कहा जाता था, जो अंग्रेजी में भाषांतर करते समय 'बजट' हो गया।

राजकोषीय घाटा

सरकार की कुल आय और व्यय में अंतर को आर्थिक शब्दावली में 'राजकोषीय घाटा' कहा जाता है। इससे इस बात की जानकारी होती है कि सरकार को कामकाज चलाने के लिए कितने उधार की जरूरत होगी। कुल राजस्व का हिसाब–किताब लगाने में उधार को शामिल नहीं किया जाता है। यानी, सरकार के खर्च और आमदनी के अंतर को वित्तीय घाटा या बजटीय घाटा कहा जाता है।

चालू खाता घाटा

जब किसी देश की वस्तुओं, सेवाओं और ट्रांसफर का आयात इनके निर्यात से ज्यादा हो जाता है, तब चालू खाते घाटा की स्थिति पैदा होता है। यानी, जब भारत में बनी चीजों और सेवाओं का बाहर निर्यात होता है तो इससे भुगतान हासिल होता है। दूसरी ओर, जब कोई भी वस्तु या सर्विस आयात की जाती है तो उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। इस तरह, देश में प्राप्त भुगतान और बाहरी देशों को चुकाई गई कीमत में जो अंतर आता है वह चालू खाता घाटा कहलाता है।

सरकारी राजस्व व व्यय

सरकारी राजस्व सरकार को उसके सभी स्रोतों से होने वाली आमदनी होता है। इसके विपरीत सरकार जिन–जिन मदों में खर्च करती है उसे सरकारी व्यय कहते हैं। यह सरकार की वित्तीय नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।

बजट आकलन

वित्तमंत्री संसद में बजट प्रस्ताव रखते हुए विभिन्न तरह के कर और शुल्क के माध्यम से होने वाली आमदनी और योजनाओं व अन्य तरह के खर्चों का लेखा पेश करती हैं, उसे आमतौर पर बजट आकलन कहा जाता है।

वित्त विधेयक

इस विधेयक के माध्यम से ही आम बजट पेश करते हुए वित्तमंत्री सरकारी आमदनी बढ़ाने के विचार से नए करों आदि का प्रस्ताव करते हैं। इसके साथ ही वित्त विधेयक में मौजूदा कर प्रणाली में किसी तरह का संशोधन आदि को प्रस्तावित किया जाता है। संसद की मंजूरी मिलने के बाद ही इसे लागू किया जाता है।

राजस्व सरप्लस

यदि राजस्व प्राप्तियां राजस्व खर्च से अधिक हैं, तो यह अंतर राजस्व सरप्लस की श्रेणी में होगा।

विनियोग विधेयक

विनियोग विधेयक का सीधा अर्थ यह है कि तमाम तरह के उपायों के बावजूद सरकारी खर्चे पूरे करने के लिए सरकार की कमाई नाकाफी है और सरकार को इस मद के खर्चे पूरे करने के लिए संचित निधि से धन की जरूरत है। एक तरह से वित्तमंत्री इस विधेयक के माध्यम से संसद से संचित निधि से धन निकालने की अनुमति मांगते हैं।

पूंजी बजट

बजट पेश करते हुए वित्तमंत्री सरकारी आमदनी का ब्योरा पेश करते हैं, उनमें पूंजीगत आय भी शामिल होती है। यानी, इसमें सरकार द्वारा रिजर्व बैंक और विदेशी बैंक से लिए जाने वाले कर्ज, ट्रेजरी चालानों की बिक्री से होने वाली आय के साथ ही पूर्व में राज्यों को दिए गए कर्जों की वसूली से आए धन का हिसाब–किताब भी इस पूंजी बजट का हिस्सा है।

संशोधित आकलन

यह बजट में खर्चों के पूर्वानुमान और वास्तविक खर्चों के अंतर का ब्योरा है।

पूंजी भुगतान

सरकार को किसी तरह की परिसंपत्ति खरीदने के लिए जो भुगतान देना होता है, वह इस श्रेणी में आता है। केंद्र सरकार द्वारा राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और सार्वजनिक उपक्रमों को मंजूर कर्ज और अग्रिम राशि भी पूंजी खर्च के रूप में जाना जाता है।

पूंजी प्राप्तियां

रिजर्व बैंक अथवा अन्य एजेंसियों से प्राप्त कर्ज, ट्रेजरी चालान की बिक्री से होने वाली आमदनी के साथ ही राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों को दिए गए पिछले कर्जों की उगाही और सार्वजनिक उपक्रमों में अपनी हिस्सेदारी बेचने से प्राप्त धन भी इसी श्रेणी में आते हैं।

अनुदान मांग

संचित कोष से मांगे गए धन के खर्चों का अनुमानित लेखा–जोखा ही अनुदान मांग है।

योजना खर्च

राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को सहायता के अलावा केंद्र सरकार की योजनाओं पर होने वाले सभी तरह के खर्चों को इसमें शामिल किया जाता है।

गैर योजना खर्च

इसमें ब्याज की अदायगी, रक्षा, सब्सिडी, डाक घाटा, पुलिस, पेंशन, आर्थिक सेवाएं, सार्वजनिक उपक्रमों को दिए जाने वाले कर्ज और राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और विदेशी सरकारों को दिए जाने वाले कर्ज शामिल होते हैं।

---

2 करोड़ नए घर बनाए जाएंगे

आशा वर्कर को आयुष्मान भारत योजना के दायरे में लाया जाएगा, 3 करोड़ महिला बनेंगी लखपति दीदी

दिल्ली। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत, एक परिवार को 1.3 लाख की वित्तीय सहायता दी जाती है। यह राशि तीन किस्तों में दी जाती है–

पहली किस्तः 40,000
दूसरी किस्तः 40,000
तीसरी किस्तः 50,000

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के तहत, एक परिवार को 1.2 लाख की वित्तीय सहायता दी जाती है। यह राशि भी तीन किस्तों में दी जाती है:

पहली किस्तः 40,000
दूसरी किस्तः 40,000
तीसरी किस्तः 40,000सरकारी योजनाओं को लेकर बहुत बड़ी घोषणा अंतरिम बजट में नहीं की गई। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत अब तक 3 करोड़ घर बनाए जा चुके हैं। इस बार 2 करोड़ नए घर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। आयुष्मान योजना को लेकर लोगों को उम्मीद थी कि मुफ्त इलाज के लिए सालाना प्रति परिवार की लिमिट पांच लाख रुपए से बढ़ाई जाएगी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

सरकारी योजनाओं को लेकर निर्मला की 5 बातें

सभी आशा कर्मी बहनों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को आयुष्मान भारत योजना के दायरे में लाया जाएगा।

सूर्योदय योजना के तहत 1 करोड़ घरों में 300 यूनिट सोलर बिजली फ्री दी जाएगी।

2 करोड़ नए घर प्रधानमंत्री योजना के तहत बनाए जाएंगे।

लखपति दीदी योजना के तहत 3 करोड़ लखपति दीदी बनाई जाएंगी

ब्लू इकोनॉमी 2.0 के तहत नई योजना शुरू की जाएगी।

सबसे पहले जानिए सूर्योदय योजना के बारे में

अंतरिम बजट में घोषाणा हुई कि सूर्योदय योजना के तहत 1 करोड़ घरों में 300 यूनिट सोलर बिजली फ्री दी जाएगी। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के दूसरे दिन प्रधानमंत्री मोदी ने सूर्योदय योजना लॉन्च की। अगर हर महीने बिजली का बिल 2,500 से 3,000 रुपए आता है तो यह घटकर 8 रुपए प्रतिदिन यानी 240 रुपए महीना हो सकता है। इसके लिए आपको घर पर 3झू का रूफटॉप सोलर सिस्टम लगवाना होगा।

ऐसे मिलेगी बिजली फ्री

जिन एक करोड़ घरों में रूफ टप सोलर पैनल लगाया जाएगा, उन घरों में पैदा होने वाली सोलर एनर्जी सीधे उस घर को मिलने की बजाय पहले सप्लाई ग्रिड में जाएगी। इस तरह सोलर रूफ टप वाला हर घर न केवल उपभोक्ता होगा बल्कि इलेक्ट्रिसिटी भी जेनरेट करेगा। ऐसे हर एक घर को प्रति महीने 300 यूनिट तक बिजली मुफ्त दी जाएगी।

अगर उस घर से 300 यूनिट ज्यादा बिजली पैदा हो रही है, तो वह डिस्ट्रीब्यूशन कंपनियों को बिजली बेच सकेगा। इस तरह मुफ्त बिजली और बिजली बेचकर ऐसे हर परिवार को सलाना 15–18 हजार बचेंगे। सरकार का कहना है कि सोलर प्लांट्स की बिक्री, इंस्टॉल करने और मेंटेनेंस से भारी संख्या में युवाओं को रोजगार भी मिलेगा।

डिफेंस बजट के लिए मिले सबसे ज्यादा 6.2 लाख करोड़

नई दिल्ली। ये बात 1999 में कारगिल जंग के वक्त भारत के आर्मी चीफ जनरल वीपी मलिक ने कही थी। कारगिल वॉर भारत की तरफ से लड़ा गया आखिरी युद्ध था। 25 साल बाद दुनिया में एक साथ दो जगह गाजा और यूक्रेन में जंग चल रही है। भारत को पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर पूर्व और हिंद महासागर में चीन से चुनौतियां मिल रही हैं। इन सब के बीच अंतरिम बजट 2024–25 पेश किया। सरकार ने डिफेंस पर खर्च के लिए 6.2 लाख करोड़ रुपए दिए हैं। ये पिछले साल के मुकाबले केवल 0.27 लाख करोड़ रुपए यानी 3.4 बढ़ा है। सरकार ने पिछले साल डिफेंस बजट के लिए 5.93 लाख करोड़ रुपए दिए थे। वित्त वर्ष 2024–25 के अंतरिम बजट में सबसे ज्यादा डिफेंस को ही मिला है। कुल बजट में इसकी हिस्सेदारी 8 है।

अंतरिम बजट के भाषण में निर्मला सीतारमण ने बताया कि डिफेंस सेक्टर के लिए डीप–टेक टेक्नोलॉजी को मजबूत किया जाएगा। इसका मकसद हथियारों के लिए देश को आत्मनिर्भर बनाना है। डीप टेक स्टार्ट अप के जरिए मशीन लर्निंग, रोबोटिक्स , क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में रिसर्च की जाएगी फिर इसका इस्तेमाल डिफेंस में किया जाएगा।

1. रेवेन्यू : इससे सैलरी बांटी जाती है

सरकार ने इस साल तीनों सेनाओं की सैलरी के लिए 2.82 लाख करोड़ रुपए आवंटित किए हैं। ये पिछले साल के मुकाबले 12652 करोड़ रुपए ज्यादा है। वित्त वर्ष 2023–24 में रेवेन्यू बजट के लिए 2.77 लाख करोड़ रुपए दिए गए थे।

2. कैपिटल ऐक्सपेंडीचर : इससे हथियार और दूसरा जरूरी सामान खरीदा जाता है

हथियारों की खरीददारी के लिए 1.62 लाख करोड़ रुपए दिए गए हैं। ये पिछले साल के मुकाबले केवल 10,231 करोड़ रुपए ज्यादा है। वित्त वर्ष 2023–24 में सरकार ने हथियारों की खरीद के लिए 1.52 लाख करोड़ दिए थे। सेना की ताकत के लिहाज से यह सबसे अहम पार्ट होता है। इससे हथियार, गोले–बारूद, फाइटर प्लेन जैसी चीजें खरीदी जाती हैं। इस साल हथियार खरीदने के लिए सबसे ज्यादा बजट एयरफोर्स को 57 हजार करोड़ रुपए मिला है। इसके बाद नेवी को 52 हजार करोड़ और फिर सेना को 37 हजार करोड़ रुपए दिए गए हैं। वित्त मंत्री ने साल 2023–24 के लिए कैपिटल बजट में 1.62 लाख करोड़ रुपए अलॉट किए थे। जबकि रक्षा मंत्रालय ने सरकार से हथियार खरीदने के लिए 1.76 लाख करोड़ रुपए की मांग की थी।

3. पेंशन: रिटायर्ड सैन्य कर्मियों को पेंशन देने के लिए

इस साल पेंशन के लिए सरकार ने 1.41 लाख करोड़ रुपए दिए हैं। डिफेंस बजट में पेंशन के लिए पिछले साल 1.38 लाख करोड़ रुपए दिया गया था। इस साल पेंशन के लिए 3 हजार करोड़ रुपए ज्यादा दिया गया है। वहीं 2022 में यह आंकड़ा 1.19 लाख करोड़ रुपए था। इस साल पेंशन के लिए सबसे ज्यादा आर्मी को 127636 करोड़ फिर एयरफोर्स को 13813 करोड़ और नेवी को सबसे कम 7731 करोड़ दिया है। देश में तीनों सेनाओं से रिटायर्ड सैनिकों की संख्या करीब 26 लाख है।

रक्षा क्षेत्र में रिसर्च पर बजट दोगुना करने की जरूरत

संसदीय कमिटी की रिपोर्ट के मुताबिक देश को आने वाले सालों में रक्षा क्षेत्र में रिसर्च पर बजट दोगुना करने की जरूरत है। फिलहाल डिफेंस रिसर्च का जितना बजट है, वह सिर्फ देश को आत्मनिर्भर बनाने या उसकी रक्षा करने के लिए ही काफी है। जब तक देश हथियारों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहेगा वो स्वतंत्र रूप से फैसले नहीं ले सकता है, उसे सुरक्षा के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ेगा। इससे देश ग्लोबल लीडर नहीं बन सकता।

सिकंदर से 'सैंधव' तक

इस हफ्ते ओटीटी पर आ रही ये फिल्में और वेब सीरीज

वेंकटेश की फिल्म सैंधव इसी महीने सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी मिस्टर एंड मिसेज स्मिथ एक्शन वेब सीरीज है, जो स्पाइज की कहानी है ओटीटी पर इस हफ्ते डाक्युसीरीज भी रिलीज हो रही हैं।

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। फरवरी के पहले हफ्ते में ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर कई बड़ी और दिलचस्प फिल्में रिलीज के लिए कतार में हैं। इनमें दक्षिण भारतीय भाषाओं की वो फिल्में भी शामिल हैं, जो पिछले दिनों सिनेमाघरों में रिलीज हुई थीं। नेटफ्लिक्स, प्राइम वीडियो, डिज्नी प्लस हॉटस्टार, जियो सिनेमा और लायंसगेट प्ले अंग्रेजी भाषा की फिल्में और वेब सीरीज भी रिलीज हो रही हैं। इनमें हिस्टोरिकल, साइ फाइ, एक्शन, डॉक्युड्रामा शामिल हैं।

अलेक्जेंडर– द मेलकग आफ आगाड

31 जनवरी को नेटफ्लिक्स पर 'अलेक्जेंडर– द मेकिंग ऑफ अ गॉड' आ रही है। इतिहास से जुड़े विषयों में दिलचस्पी है तो ये सीरीज आपके लिए ही बनाई गई है। इसमें सिकंदर के विश्व विजेता बनने की ख्वाहिशों को दिखाया गया है। एक्सपर्ट्स के साथ बातचीत के साथ दृश्यों का नाटकीय रूपांतरण भी किया गया है।

नेवर बैक डाउन 2

एक फरवरी को आ रही नेटफ्लिक्स की स्पोर्ट्स एक्शन फिल्म 'नेवर बैक डाउन 2 द बीट डाउन' का निर्देशन जाने–माने एक्शन एक्टर माइकल जे व्हाइट ने किया है। माइकल ने फिल्म में लीड रोल भी निभाया है। यह फिल्म मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स के बारे में है। यह 2011 की फिल्म है।

इवाल्यूशन

1 फरवरी को नेटफ्लिक्स पर इवॉल्यूशन आ रही है, जो 2001 में रिलीज हुई थी। यह एलियन साइ फाइ फिल्म है।

आफ्टर एवरीलथग

पहली फरवरी को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हो रही रोमांटिक ड्रामा फिल्म में हीरो फीनेस टिफिन, जोसफिन लैंगफोर्ड, मिमी कीने मुख्य भूमिकाओं में हैं।

मिस परफेक्ट

डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर 2 फरवरी को आ रही मिस परफेक्ट, तेलुगु कॉमेडी फैमिली ड्रामा सीरीज है, जिसमें लावण्या त्रिपाठी औ अभिजीत डुड्डाला मुख्य भूमिकाओं में हैं। यह सीरीज तेलुगु के साथ हिंदी, मलयालम, तमिल, कन्नड़, बंगाली और मराठी भाषाओं में स्ट्रीम की जाएगी।

संजय बताते हैं, 'एक तरफ नहाता रहता हूं, दूसरी तरफ गांव वाले आते-जाते रहते हैं। लोग कहते हैं, और संजय भाई कैसे हो, मैं साबुन में सना हुआ उनको जवाब देता हूं। लोग मुझसे उसी कंडीशन में ढोंढू जस्ट चिल वाला डायलॉग बोलने को कहते हैं। आप इस बात को समझिए कि मैं यहां किसी कलाकार के हैसियत से नहीं रहता। गांव वालों के साथ एक गांव वाले की तरह रहता हूं, और इसका जो आनंद है, वो क्या ही बताएं।'

टीवी से शुरू किया करियर, आज इंडस्ट्री का बड़ा चेहरा

संजय मिश्रा को इंडस्ट्री में पहला ब्रेक चाणक्य टीवी शो में मिला था। चाणक्य मिलने से पहले उन्होंने अमिताभ बच्चन के साथ एक कॉमर्शियल में भी काम किया था। वहीं केतन मेहता की 'मिर्च मसाला' में काम किया। संजय की डेब्यू फिल्म 'ओह डार्लिंग ये है इंडिया' थी। संजय ने कुछ दिनों के लिए एक्टिंग छोड़कर सहारा समय न्यूज चैनल में एंकरिंग भी की।

सत्या और दिल जैसी फिल्मों में काम करने के बाद संजय इंडस्ट्री में पॉपुलर होने लगे। इसके बाद 'बंटी और बबली' और 'अपना सपना मनी मनी' से भी पहचान मिली। संजय ने गोलमाल और धमाल जैसी बैक टु बैक हिट फिल्मों में काम किया। 2013 की फिल्म आंखों देखी के लिए संजय को कई अवॉर्ड्स भी मिले। टीवी शोज से करियर शुरू करने वाले संजय मिश्रा आज इंडस्ट्री का बड़ा नाम बन चुके हैं।

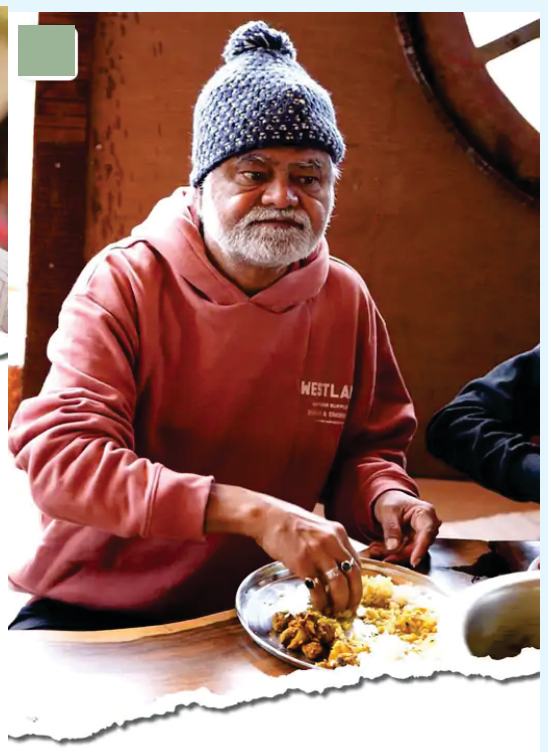

खास बात यह रही कि संजय अपने सभी साथियों के साथ जमीन पर बैठकर खाना खा रहे थे। उन्होंने हमें भी ऑफर किया। बिना देर किए हम भी उनके बगल में बैठ गए। जमीन पर बैठकर एक समूह में खाने का अलग ही मजा आ रहा था। संजय ने कहा कि रात का खाना लकड़ी की आंच में बनता है। इससे खाने में और स्वाद बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि अगली बार आना, लिट्टी चोखा लगाएंगे।

चकाचौंध से दूर संजय मिश्रा का नया आशियाना

महाराष्ट्र के गांव में बनाया फार्म हाउस, खेती–बाड़ी में तल्लीन हुए, बोले– मुंबई में मन नहीं लगता

चोपड़ा खानदान में फिर बजेगी शहनाई

परिणीति के बाद प्रियंका की ये बहन बनेगी दुल्हन, राजस्थान में होगी शादी

चोपड़ा खानदान में फिर होगी शादी
प्रियंका चोपड़ा की कजिन मीरा की होने वाली है शादी
एक्ट्रेस राजस्थान में लेंगी सात फेरे

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। साल 2023 में फिल्मी गलियारों से कई घरों में शहनाई बजी। अब 2024 में भी कई सेलिब्रिटीज के घर शादी की शहनाइयां गूंजेंगी। पिछले साल प्रियंका चोपड़ा की कजिन परिणीति चोपड़ा ने 'आप' नेता राघव चड्ढा से शादी कर ली थी। अब चोपड़ा खानदान में एक बार फिर शादी को लेकर जश्न का माहौल बनने वाला है।

चोपड़ा खानदान में फिर बजेगी शहना

'सफेद' फेम एक्ट्रेस मीरा चोपड़ा इस साल शादी करने की तैयारी में हैं। वह अपनी जिंदगी का नया सफर शुरू करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। एक्ट्रेस ने टाइम्स को दिए इंटरव्यू में इस बात का खुलासा किया है कि वह कब शादी करेंगी। इसी के साथ मीरा चोपड़ा ने एक वीडियो भी शेयर किया है, जो उनके जल्द दुल्हन बनने की बात को पक्की करता है।

इस राज्य में सात फेरे लेंगी एक्ट्रेस

मीरा ने बताया कि उनकी शादी मार्च में होगी। डेट भी फाइनलाइज कर ली गई है। एक्ट्रेस ने कहा कि वह राजस्थान में शादी करना चाहती हैं। इसके लिए राजस्थान में ही शानदार वेन्यू की तलाश की जा रही है। मीरा ने अपने होने वाले पति के बारे में कोई डिटेल नहीं दी, मगर इतना जरूर कहा कि धीरे–धीरे वह अपनी शादी से जुड़ी हर कड़ी का खुलासा करती रहेंगी।

शादी में शामिल होंगे निक–प्रियंका

मीरा ने कहा कि शादी के लिए निक जोनस (छपबा श्रवदें) और प्रियंका चोपड़ा (च्तपलंदां बेवचतं) को आमंत्रित किया जाएगा। अगर वह किसी प्रोजेक्ट में बिजी नहीं होंगे, तो जरूर आएंगे।

मीरा ने इन फिल्मों में किया है काम

मीरा ने 'सेक्शन 375', 'सफेद' जैसी फिल्मों में काम किया है। इसी के साथ एक्ट्रेस ने साउथ जोन में भी अपने टैलेंट का दमखम दिखाया है। मीरा ने 'मरुधामलाई' और 'अन्बे आरुयीरे' जैसी कुछ साउथ की फिल्मों में काम किया है।

एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा ने सितंबर 2023 में राघव च ा से शादी कर अपने लजदगी के नए पड़ाव की ओर कदम रखा था। अब उनके बाद चोपड़ा खानदान की एक और बेटी दुल्हन बनने वाली है। एक्ट्रेस मीरा चोपड़ा की जल्द ही शादी होने वाली है। उन्होंने डेस्टिनेशन वेलडग से लेकर वेलडग मंथ तक का खुलासा किया है। मीरा की शादी में निक–प्रियंका धूम मचाते नजर आ सकतें हैं।

बिग बास के बाथरूम में भी लगे होते हैं माइक: एक्स कंटेस्टेंट ईशा मालवीय ने किया खुलासा, बोलीं– कोई रोए तो वो भी रिकार्ड होता है

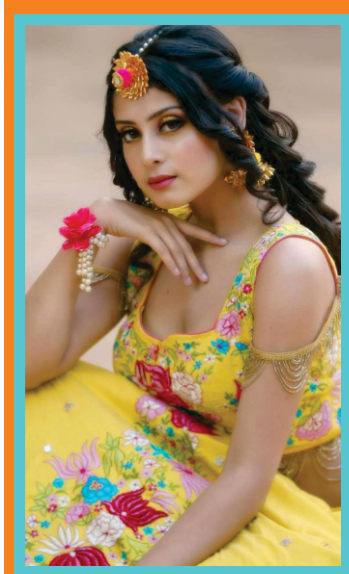

वान ने रोहित की कप्तानी पर सवाल उठाए

कहा– अगर कोहली कप्तान होते तो भारत हैदराबाद टेस्ट नहीं हारता

स्पोर्ट्स डेस्क। पहली पारी में 190 रन की मजबूत बढ़त बनाने के बावजूद कोहली के बिना खेल रहे भारत को स्पिन की अनुकूल परिस्थितियों में 28 रन से हार का सामना करना पड़ा जिससे इंग्लैंड ने पांच मैच की सीरीज में 1–0 की बढ़त बना ली। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन का मानना है कि अगर विराट कोहली भारत के कप्तान होते तो मेजबान टीम को इंग्लैंड के खिलाफ हैदराबाद में पहले टेस्ट में हार का सामना नहीं करना पड़ता। उनका मानना है कि रोहित शर्मा मैच के दौरान पूरी तरह से 'खोए' रहे। पहली पारी में 190 रन की मजबूत बढ़त बनाने के बावजूद कोहली के बिना खेल रहे भारत को स्पिन की अनुकूल परिस्थितियों में 28 रन से हार का सामना करना पड़ा जिससे इंग्लैंड ने पांच मैच की सीरीज में 1–0 की बढ़त बना ली। यह हैदराबाद में भारत की पहली टेस्ट हार थी। कोहली निजी कारणों से शुरुआती मैच में नहीं खेल पाए जबकि विशाखापट्टनम में होने वाले दूसरे टेस्ट में भी नहीं खेलेंगे। वॉन ने कहा, 'उन्हें टेस्ट क्रिकेट में कोहली की कप्तानी की काफी कमी खली। उस हफ्ते विराट की कप्तानी में भारत मैच नहीं हारता।'वॉन ने कहा, 'रोहित एक दिग्गज और महान खिलाड़ी हैं लेकिन मुझे लगा कि वह पूरी तरह खोया हुआ था। मुझे लगा कि रोहित की कप्तानी बहुत ही औसत थी। मुझे नहीं लगता कि उसने क्षेत्ररक्षण में चतुराई भरे बदलाव किए या गेंदबाजी में बदलाव को लेकर सक्रिय था।'

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार

मो0. नं0. 7307180148,9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

अश्विन की बादशाहत कायम बुमराह को भी हुआ फायदा

बल्लेबाजों में शीर्ष–10 में सिर्फ एक भारतीय

स्पोर्ट्स डेस्क। टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग की बात करें तो में शीर्ष 10 में अश्विन और बुमराह के अलावा तीसरे भारतीय बाएं हाथ के स्पिनर रवींद्र जडेजा हैं। वह छठे स्थान पर काबिज हैं। भारत के दिग्गज ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने बुधवार को जारी ताजा आईसीसी गेंदबाजी रैंकिंग में शीर्ष स्थान बरकरार रखा है, जबकि हमवतन जसप्रीत बुमराह चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में भारत की 28 रन की हार के दौरान मैच में छह विकेट चटकाने वाले अश्विन के 853 रेटिंग अंक हैं, जबकि आधा दर्जन विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज बुमराह एक पायदान चढ़कर चौथे स्थान पर पहुंच गए। वहीं, टेस्ट बल्लेबाजों की शीर्ष–10 की रैंकिंग में भारत का सिर्फ एक खिलाड़ी है।

जडेजा भी शीर्ष 10 में शामिल

टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग की बात करें तो में शीर्ष 10 में अश्विन और बुमराह के अलावा तीसरे भारतीय बाएं हाथ के स्पिनर रवींद्र जडेजा हैं। वह छठे स्थान पर काबिज हैं। जडेजा टेस्ट ऑलराउंडर की रैंकिंग में शीर्ष पर बने हुए हैं। हालांकि, उन्हें इंग्लैंड के जो रूट से कड़ी चुनौती मिल सकती है जो हैदराबाद टेस्ट में शानदार प्रदर्शन करने के साथ ही चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। अगर इंग्लैंड का यह दिग्गज गेंद से भी अच्छा प्रदर्शन जारी रखता है तो जडेजा को इस सीरीज में ही पीछे छोड़ सकता है।

आईसीसी टेस्ट बार्सि रैंकिंग

रूट को मुख्य रूप से उनके बल्लेबाजी कौशल के लिए जाना जाता है, जबकि 33 साल के इस तेज गेंदबाज ने हैदराबाद टेस्ट में पांच विकेट चटकाए थे। उन्होंने दूसरी पारी में इंग्लैंड के लिए पहला ओवर भी फेंका था। पांच विकेट ने रूट को टेस्ट ऑलराउंडरों की सूची में एक नई करियर–बेस्ट रेटिंग पर पहुंचा दिया है। रूट ऑलराउंडरों में अश्विन और शाकिब–अल–हसन से पीछे हैं, जबकि अक्षर पटेल एक पायदान गिरकर छठे स्थान पर खिसक गए हैं।

कोहली बल्लेबाजों में शीर्ष–10 में

बल्लेबाजों में शीर्ष–10 में एकमात्र भारतीय विराट कोहली हैं। इंग्लैंड के खिलाफ शुरुआती दो टेस्ट से बाहर होने के बावजूद कोहली की रैंकिंग में एक स्थान का सुधार हुआ और वह छठे स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं, हैदराबाद में इंग्लैंड को मैच जिताने वाले ओली पोप 20 स्थान की छलांग के साथ 15वें स्थान पर पहुंच गए। पोप ने दूसरी पारी में 196 रन बनाकर भारत को हैरान कर दिया था।

पोप को भी हुआ फायदा

पोप के इंग्लैंड टीम के साथी बेन डकेट ने भी अपनी रैंकिंग में सुधार किया और भारत के खिलाफ 35 और 47 रन की पारी खेलने के बाद पांच पायदान के फायदे के साथ 22वें स्थान पर पहुंच गए। ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा गाबा में वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट की पहली पारी में अर्धशतक के बाद दो स्थान के सुधार के साथ आठवें स्थान पर पहुंच गए।

वेस्टइंडीज के तीन गेंदबाजों को फायदा

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ प्रभावशाली प्रदर्शन के बाद वेस्टइंडीज के तीन तेज गेंदबाजों ने भी अपनी रैंकिंग में सुधार किया। केमार रोच दो स्थान ऊपर 17वें, अल्जारी जोसेफ चार स्थान ऊपर 33वें और गाबा में प्लेयर ऑफ द मैच रहे शमर जोसेफ 42 स्थान के फायदे के साथ 50वें स्थान पर पहुंच गए हैं। ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज के बीच अब तीन मैचों की वनडे सीरीज खेली जाएगी। वहीं, भारत और इंग्लैंड के बीच दो फरवरी से विशाखापत्तनम में सीरीज का दूसरा टेस्ट खेला जाएगा।

इंग्लैंड के खिलाफ शुरुआती दो टेस्ट से बाहर होने के बावजूद कोहली की रैंलकग में एक स्थान का सुधार हुआ और वह छठे स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं, हैदराबाद में इंग्लैंड को मैच जिताने वाले ओली पोप 20 स्थान की छलांग के साथ 15वें स्थान पर पहुंच गए।

'आपने मुझे आकर्षित किया

शिखर धवन का इस महिला एंकर को मजेदार जवाब हो रहा वायरल

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत के दिग्गज क्रिकेटर शिखर धवन इन दिनों अपने बेटे जोरावर से नहीं मिल पाने की वजह से परेशान हैं। जोरावर धवन की पूर्व पत्नी आयशा मुखर्जी के साथ ऑस्ट्रेलिया में हैं। धवन से तलाक के बाद आयशा ने जोरावर की अपने पिता से बातचीत भी बंद करा दी है। इसको लेकर धवन रोजाना एक खत उसे लिखते हैं। वह हाल ही में भावुक भी हो गए थे। हाल ही में जोरावर के जन्मदिन पर धवन ने एक भावुक पोस्ट भी किया था।

इसका खुलासा उन्होंने हाल ही में एक पॉडकास्ट शो के दौरान किया था। अब 'ह्यूमन्स ऑफ बॉम्बे पॉडकास्ट' में धवन ने अपने निजी और पेशेवर जीवन के बारे में विस्तार से बात की है। आईपीएल 2024 में पंजाब किंग्स का नेतृत्व करने जा रहे क्रिकेटर ने उनकी जिंदगी में घट रही घटनाओं के बारे में बताया। साथ ही यह भी बताया कि उन्हें सचिन तेंदुलकर, एमएस धोनी, विराट कोहली से क्या प्रेरणा मिली थी। धवन ने एंकर करिश्मा मेहता के साथ 'आकर्षण के नियम' के बारे में भी बात की और शो में विषय पर चर्चा करते हुए एक एंकर पर चुटकी भी ली। धवन का मानना है कि जब 'आकर्षण के नियम' की बात आती है तो वह इसके फॉलोअर हैं। एंकर ने कहा कि वह भी सिद्धांत में विश्वास करती है और हाल ही में उसी हिस्सा भी लिया था। एंकर: जब 'आकर्षण के नियम' की बात आती है तो मैं भी इसे फॉलो करती हूं। पर एक वर्कशॉप में इस विषय पर हाल ही में मैंने पीएचडी के साथ एक वर्कशॉप में हिस्सा लिया।

धवन ने महान सचिन तेंदुलकर से सीखे गए सबक के बारे में भी बात की, जिसमें खेल के लिए समर्पण और प्यार शामिल है। उन्होंने कहा, 'सचिन पाजी से समर्पण, खेल के प्रति उनका प्यार और ज्ञान सीखा। वह विलो के वजन को बहुत आसानी से समझ लेते थे, जो खेल के बारे में उनके ज्ञान की गहराई को दर्शाता है। वह जानते थे कि बल्ले से काम कैसे निकलवाना है। इसलिए वह क्रिकेट से इतना घुल मिल गए थे। उन्होंने हमें निश्चित रूप से सिखाया कि अपनी पारी कैसे बनाई जाए और अंत में कैसे शतक लगाया जाए।

जहां तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का सवाल है धवन इस समय टीम इंडिया से बाहर चल रहे हैं और उनकी वापसी की फिलहाल कोई गुंजाइश नहीं है। उन्होंने अब तक भारत के लिए 34 टेस्ट, 167 वनडे और 68 टी20 खेले हैं। टेस्ट में उनके नाम 2315 रन, वनडे में 6793 रन और टी20 में 1759 रन हैं। टेस्ट में उनके नाम सात शतक और पांच अर्धशतक, वनडे में 17 शतक और 39 अर्धशतक और टी20 में 11 अर्धशतक हैं। धवन ने अपना पिछला अंतरराष्ट्रीय मैच दिसंबर 2022 में खेला था।